ओ३म्

प्रश्नोत्तरशतक

अर्थात्

शङ्का समाधान

पण्डित जयकृष्ण पांडे तथा लाला भवानीदास
साह आदि कई एक देशहितैषी भद्रपुरुषों
की सम्मत्यनुसार बालबोधार्थ पण्डित
रमादत्त त्रिपाठी मन्त्री आर्यसमाज
नैनीताल ने बनाया।

और

पं० तुलसीराम स्वामी के प्रबन्ध से
सरस्वतीयन्त्रालय

इटावा

में छपवाया।

१५ मार्च सन् १८९६ ई०

प्रथमबार १०००] [मूल्य =)
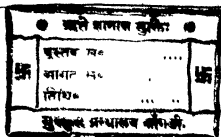
ओ३म्

भूमिका ॥

भिन्न २ सम्प्रदाय वाले मनुष्यों ने अपनी २ बुद्धि अनुसार यथासमय प्रश्न किये. उन का उत्तर सप्रमाण दिया गया है यह पुस्तक सामान्य बोध वाले धर्मजिज्ञासु मनुष्यों के अर्थ अथवा उन बालकों के लिये उपयोगी होगा जिन्हो ने केवल अक्षरदीपिकामात्र पढी हो. जिन को वेद वेदाङ्ग उपनिषद् षट्दर्शन धर्मशास्त्र सत्यार्थप्रकाश आर्य्यसिद्धान्त आदि निश्चयात्मक ग्रन्थ दुर्लभ हैं. अथवा जिन की बुद्धि झूठी कथा वार्त्ता असम्भव गाथा (मजहबी किस्से) सुनने से भ्रमाच्छादित डामाडोल हो गई हो सो परब्रह्म की आज्ञारूप सत्य सनातन धर्म कर्म की खोजी हविष्यान्नभोजी हो जावे यही इस पुस्तक के रचने का मुख्य उद्देश्य है ॥ ग्रन्थकर्त्ता

ओ३म् परमात्मने नमः

मङ्गलाचरणम्

ओ३म् शन्नो अस्तु द्विपदे शञ्चतुष्पदे।

हे जगद्गुरो परमकृपालो! हमारे हृदय में ऐसी प्रेरणा कीजिये जिस से हम मनुष्यमात्र आप के पुत्र परस्पर मित्रभाव से वर्त्ताव करें. शुद्ध बुद्धि द्वारा आप को पहिचाने. आप के नियम गुण कर्म स्वभाव को जाने और माने. हे जगदीश्वर! विश्वम्भर! हमारे सहायक जीवनाधार गवादि पशुओं की सर्वथा सर्वदा रक्षा कीजिये. हे शिवशंकर! यह पुस्तक आप की सनातनी वैदिकी शिक्षा दीक्षानुकूल तथा पाठक श्रोताजनो को शान्तिकारक भ्रान्तिहारक धर्मार्थकाममोक्षमार्गदर्शक वेदविरुद्धपाषण्डमतमर्द्दक सत्यासत्य का बोधक शोधक हो. ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्ति ॥

---

१ प्रश्न

साम्प्रत धर्म विषय में जिस किसी से पूछते हैं वह यही कहता है कि जिस को हम मानते जानते और जिस चाल से चलते हैं वही ईश्वरोक्त सनातन धर्म कर्म है. परन्तु परस्पर विरोधी असंख्य मतमतान्तर है अब किस को सत्य समझें ?।

उत्तर

सत्य शुद्ध धर्म कर्म का मार्ग लक्षण धारण विधि और उस के फल सहित परब्रह्मपरमात्मा प्रत्येक कल्प के आरम्भ में ही अपने नित्य निर्मल ज्ञानस्वरूप वेद द्वारा पुत्रवत् प्रजा के हितार्थ बतला दिया करता है. और नित्य पुरुष का नियम भी नित्य हुआ करता है पीछे महर्षि लोग उपवेद उपनिषद् दर्शनशास्त्र धर्मशास्त्र द्वारा टीकारूपी व्याख्या कर दिया करते हैं वेही सत्य सनातन मान्य हैं। इन के विपरीत कपोलकल्पित पाषण्डमत के ग्रन्थ त्याज्य जानने चाहिये।

२ प्रश्न

वर्त्तमान कल्प के आदि में किस द्वीप वा देश में कितने मनुष्यादि जीव जन्तु उत्पन्न भये थे. इस विषय में भिन्न २ देशीय महाशयो की पृथक् २ आनुमानिक सम्मति सुनी जाती है और उस काल का सत्यवक्ता जीवित पुरुष कही दृष्टि आता नही इस में आप कोई दृढ प्रमाण दे सकते हैं ?

उत्तर

जैसा कृषाण क्षेत्र में बीज छिड़क देता है तैसा ही परमेश्वर ने असंख्य प्रकार के असंख्य जीवो के बीजरूप सामग्री जो उस के पास पहिले कल्पान्त से उपस्थित थी वो दी. वा अमैथुनी विधि से उत्पन्न किये. फिर यथाक्रम उत्पन्न होने लगे. भावार्थ यह है कि जितने उत्तम मध्यम निकृष्ट मनुष्यादि सम्प्रत विद्यमान है, इन्ही के अनुमान आदि में भी उत्पन्न भये थे. एक ही जोड़ा स्त्री पुरुष से सब की उत्पत्ति मानने वाले भ्रान्ति में हैं।

३ प्रश्न

बोली के विषय में भी हम को शका है पण्डित लोग कहते है कि ५००० वर्ष पहिले सारी पृथ्वी में केवल देववाणी सस्कृत भ ग हा बोली जाती थी. सब देश भाषा ईश्वरोक्त मूल वैदिकी भाषा के ही अपभ्रंश हैं और अन्यान्य लोग पृथक् २ द्वीप द्वीपान्तरो की अलग २ भाषा, आदि से ही होना बतलाते हैं इस में निर्भ्रान्त प्रमाण क्या है ?।

उत्तर

जैसे एक ही वंश [illegible] या करता है. कोशभर में भी सूक्ष्म बोली भेद पाया जाता है [illegible] आज पर्यन्त १९६०८५२९९५ वर्ष व्यतीत हो चुके इतने बड़े अवसर में वैदिकी भाषा अपभ्रंश होते २ इतना अन्तर हो गया हो कि जिस में एक द्वीप की भाषा द्वीपान्तर निवासी न समझ सके तो क्या आश्चर्य है ।

४ प्रश्न

प्रत्येक मनुष्य का ऐसा विश्वास सुना जाता है कि हमारे पूर्वज पितर स्वर्ग में गये है हम भी अवश्य वही जावें गे. पर हमारे मतविरोधी लोग सब नास्तिक नरकगामी हैं तो बताइये वे स्वर्ग नरक कहा है ?

उत्तर

अपने ही देह में आन्तरिकविचार दृष्टि से देखो तो मल मूत्रस्थान नरक और मस्तक बुद्धिस्थान स्वर्ग है. कारागार में मनुष्यों का रूप पहिराव आहार काम बदल जाता वा निकृष्ट मिलना सो नरक है निचले उष्ण प्रदेशों की अपेक्षा उत्तराखण्ड वा कोई सा निर्मल सुगन्धित देश वा स्थान विशेष स्वर्ग और इस के विपरीत दुर्गन्धित स्थान नरक कहाते वा भाग्यवान् सुखी पुरुष स्वर्गवासी माने जाते रोगी, अन्धे, लूले, लगड़े, कोढ़ी, भंगी विष्ठा के कीड़े आदि नीच नरकवासी माने जाने जाते हैं ।

५ प्रश्न

जब कोई बलवान् अन्यायी किसी निर्बल के द्रव्य को हरलेता है तो दुर्बल मनुष्य यही कह कर वा समझ कर धैर्य्य कर लेता है कि परलोक में देगा वा मिलेगा सो परलोक कहा है तहा जाकर किस प्रकार कितनी अवधि में के गुणा मिल सक्ता है ? ।

उत्तर

परलोक का प्रयोजन जन्मान्तर, कालान्तर, रूपान्तर, स्थानान्तर, देशान्तर है. त्रिकालज्ञ महाराजाधिराज सर्वान्तर्यामी प्रजानाथ परमेश्वर अपने गुण कर्म स्वभाव से ही बिना आवेदन किये भी शुभाशुभ कर्मों का बदला दिलाने के निमित्त ही बारम्बार जन्म मरण रूप चक्र चला रहा है. यदि कर्मफल न मिला करे तो किसी को भी दान धर्मादि शुभकर्मों की श्रद्धा तथा हिंसा निन्दा चोरी आदि दुष्कर्मों की शंका न रहने से अनर्थ हो जाय. और जितना बोया जाता है वह न फले तो कोई वृक्ष वाटिका न लगावे ।

६ प्रश्न

मरे उपरान्त उत्तम पुरुषो के देह की भस्मगति होती है दुर्जन म्लेच्छ नीच जाति की लोथ में असख्य कीड़े पड़ते वा गिद्ध गीदड़ो ने नोच खाया तो विष्ठा बना. परन्तु निराकार जीव किस चाल से कितनी अवधि में स्वर्ग वा नरक धर्मराज वा यमराज के पास पहुंचता है और वहा जाके क्या होता है ? ।

उत्तर

शरीर से जुदाई हुए उपरान्त जीवात्मा (यमलोक) वायुमण्डल अन्तरिक्ष में मूर्छित वा घोर निद्रावश सोता या यमराज की सत्ता में किञ्चित् काल के लिये रहता पश्चात् उसी न्यायाधीश परमेश्वर की प्रेरणा से कर्मफलभोग निमित्त जरायुज अण्डज स्वेदज उद्भिज्ज गर्भाशय में रोपा जाता है. तभी सुख दुःख सहन करता है. " नाशरीरस्यात्मनोभोगः कश्चिदस्तीति न्यायः " विना शरीर का जीव सुख दु:ख भोग कर ही नही सक्ता ।

७ प्रश्न

क्या मनुष्य का आत्मा भी पशु पक्षी वृक्षादि योनि पासक्ता है ? हम तो सोचते है कि जैसा धान बोये से धान गेहूं से गेहूं हुआ करते है तैसे ही पुरुष का जीव पुरुष और स्त्री का स्त्री योनि. एवम् पशु पक्षी के भी अपनी २ जाति में ही जन्म पाते होंगे ? ।

उत्तर

आत्मज्ञानी योगीश्वरों ने कहा है कि जीव का आकार अतिसूक्ष्म है जो इन नेत्रो से कही आता जाता वा देहान्तर को ग्रहण करता छोड़ता दृष्टि नही आता. परमाणुरूप वा बीजरूप पहिले देह का साधन लेकर स्थूल कलेवर को छोड़ नये २ पाता रहता है. सब जीव स्वयम्भू वा अनादि हैं. इन का कोई मुख्य कर स्वरूप जाति नाम स्थान नियत नही जब २ कर्मानुसार ईश्वर के न्याय से जिस २ रूप वा योनि को पाता है. तब २ तैसा ही प्रतीत होता है।

८ प्रश्न

आर्य्य पुरुषो के अनुसार हिन्दूलोग भी वेद शास्त्र और पुराणों के सुनने से पूर्वजन्म पुनर्जन्म (आवागमन) को मानते ही है पर वेदविरोधी अनार्य्यों को समझाने के लिये कोई पुष्ट प्रत्यक्ष प्रमाण दीजिये ?

उत्तर

प्राय· सर्वसाधारण मनुष्य किसी का उपकार किसी का अपकार किया करते हैं मिश्रित कर्मों का फल नित्य के लिये सुख वा स्वर्गवास अथवा अनन्त काल के लिये नरकवास वा दुःखभोग न्यायविरुद्ध है. जब मनुष्य के शुभाशुभ कर्म करने की अवस्था वा अवधि हुआ करती है तो फल भोग की भी अवधि

होनी चाहिये बिना शरीर का जीवात्मा सुख दुःख का भोग करही नहीं सक्ता इस लिये जिस २ के साथ जैसा २ वर्त्ताव किया हो उस २ के द्वारा बदला पाने के लिये बारम्बार देह अवश्य ही मिला करता है क्योंकि परमेश्वर नित्य न्यायकारी है ।

९ प्रश्न

प्रत्येक मनुष्यादि जगम जाति को अपने पहिले २ जन्म के कर्मों का स्मरण क्यों नही रहता जिस में बुरे कर्मों के फल भोग का स्मरण आजाने से सब जन्तु स्वयमेव पापाचरण से बच जाय ? ।

उत्तर

कर्म दो प्रकार के होते हैं एक तो नित्य कर्म जैसा श्वास लेना खाना पीना हरना बोलना चेष्टा करना मल मूत्र का त्याग आदि जिनको बालक पशु पक्षी जन्म से ही करने लगते है सिखाने स्मरण दिलाने की आवश्यकता नही रहती न कोई भूल जाता दूसरे नैमित्तिक कर्म जो कार्य्य कारण कालवशात् स्मरण आते है. अर्थात् हर्ष शोक हानि लाभ मानापमान सुख दु ख आदि द्वन्द्वाभिघात प्राक्तन शुभाशुभकर्मों के सूचक है और विशेष स्मरण न रहने के हेतु दशान्तर देहान्तर जन्मान्तर कालान्तर आहार व्यवहार हैं ।

१० प्रश्न

जीवात्मा को परमात्मा ने बनाया है वा नहीं और जीव का ईश्वर के सदृश अनादि होने में क्या प्रमाण है ? ।

उत्तर

जीवो को ईश्वर के बनाये मानने पर कई दोष उत्पन्न होते हैं "उत्पत्ति धर्मकमनित्यम् " जिस का आदि है उस का अन्त भी होता है. परमेश्वर ने असख्य जीवो को बना कर पहिले ही असख्य प्रकार की योनि किस २ कारण दी. यदि उसी की इच्छा पर निर्भर माना जाय तो मनुष्यों के शुभाशुभकर्म निष्फल ठहरते हैं और जीवों को ईश्वर ने किन २ वस्तुओ के सयोग से बनाया बिना सामान कोई कार्य्य बन नही सक्ता. यदि ईश्वर ने शक्ति से बनाया कहो तो शक्ति सयोजक विभाजक होती है आदि कारण नहीं होती. किन्तु निमित्त कारण होती है. इत्यादि युक्ति तर्क प्रमाणों से जीवात्मा का नित्य स्वयम्भू होना सिद्ध है ।

११ प्रश्न

हम ने एक कथाप्रसंग में सुना था कि व्यभिचारी मनुष्य गीदड़ कुत्ते की योनि पाते है. फल की चोरी से बानर का देह. अन्न की चोरी से मूषा बनता है इत्यादि. तो कहिये उन २ योनि में जन्म देने से परमेश्वर ने उन के जीवन का क्या उद्धार किया. फिर वे चोरी क्योंकर छोड़ सक्ते है ? ।

उत्तर

दशा परिवर्त्तन से अर्थात् योनि सगति आहार के बदल जाने से बुद्धि और और आचरण भी बदल जाता है जब इसी शरीर में तुम्हारी अवस्था ४ वर्ष ९ मास २७ दिन की थी चतुर्थ प्रहर के अन्त में क्या शोचते करते देखते सुनते थे, किञ्चिन्मात्र स्मरण नही होगा. एवम् प्रजानाथ परमेश्वर भी पहिले तो अपने बालकों को शिक्षापूर्व्वर्थ यथेच्छ योनि में जन्मदेता. पश्चात् उन के उद्धारार्थ रूपान्तर करा देता है ।

१२ प्रश्न

वह कौनसा महाकष्ट है जो नर देह में नही दिया जा सक्ता था ? हम देखते है कि बहुत से जन्मान्ध कुष्ठी आदि रोगियों की अपेक्षा पशु पक्षी वृक्ष भले हैं जो अपना २ योनि को आनन्द से तेर करते है तब पाप कर्म का फल भोग निमित्त मनुष्य के आत्मा को स्थावर कृमि कीटादि योनि में जन्म देना क्या प्रयोजन है ? ।

उत्तर

कष्ट के कायिक वाचिक मानसिक मुख्य ३ बड़े भेद है फिर इन के भी आन्तरिक सहस्त्रों सूक्ष्म भेद है. चाहे बाहर से देखने में स्थूल काय हो चाहे सूक्ष्म. चाहे मनुष्य पशु पक्षी कृमि कीट वनस्पति हो अपने आभ्यन्तरिक दुःख को जीवात्मा आप ही जानता है. अर्थात् जरायुज अण्डज स्वेदज उद्भिज्ज इन के अन्तरीय नाना प्रकार के रूपभेद वा योनिभेद कर्मफल भोग निमित्त ही बनाये गये है (देखो मनुस्मृति)

१३ प्रश्न

आप के कहने से जाना जाता है कि जो जीवात्मा मनुष्य में है सो ही पशु पक्षी वनस्पति कन्दमूल फल अन्न आदि सब बढ़ने घटने वाले जीव जन्तुओ में

है तो फिर कोई भी जीवहिंसा से नहीं बच सकता और न मुक्ति पाने योग्य हो सकता है ? ।

उत्तर

प्रवृत्ति निवृत्ति धर्म के दो मार्ग हैं हविष्यान्न खाना. जितेन्द्रिय रहना. हिंसक निन्दक आदि विघ्नकारी जन्तुओं का ताड़न मारण विसर्जन प्रवृत्तिमार्ग कहाता. जिस के प्रभाव से इस लोक परलोक में यश साम्राज्य प्राप्त होता. किन्तु उस के साथ किंचित् दुःख भी मिला रहता है । और वेद वेदांगाध्ययनाध्यापन वैराग्यावलम्बन एकान्त वास आम आडू केला आदि फलभोजन दुग्धपान इत्यादि शुभाचरण द्वन्द्वसहन तपोनुष्ठान निवृत्तिमार्ग वा मुक्तिमार्ग कहाता है । योग-शास्त्र देखो ।

१४ प्रश्न

हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि जीवधारी का भक्षण जीवधारी है मनुस्मृति में भी कहा है कि "चराणामन्नमचरा दंष्ट्रिणामप्यदंष्ट्रिणः" इत्यादि अर्थात् चलने फिरने वालो का अन्न न चलने वाले दांत वालो का अन्न विना दांत वाले हाथ वालों का भक्ष्य विना हाथ वाले और बलवान् पुरुषों का अन्न भीरु (डरपोक) कायर हैं तो चौरासीलक्ष के फन्दे से मनुष्य कैसे छूट सकते है ? वे तो बदला देने पाने में ही रह जावें गे ? ।

उत्तर

"चराणामन्नमचरेति" यह विधिवाक्य नहीं है किन्तु लोकरीति सूचक है इस से मनु जी का यह अभिप्राय नहीं है कि बलवान् मनुष्य निर्बल दुर्बल पशुपक्षियो को मारखावें वा शक्तिमान् मनुष्य अशक्त पुरुषो की धनसम्पत्ति अधिकार हर लेवें. प्रत्येक प्रसंग आद्योपान्त देखना तात्पर्य्य समझ लेना चाहिये ।

१५ प्रश्न

जब विधाता ने पहिले सृष्टि रचना की होगी उस दिन भी तो मनुष्य पक्षी घास आदि सब प्रकार के जीव जन्तु बनाये गये होंगे तब प्राणियो के प्राक्तन शुभाशुभ कर्मफल कहा से आये थे ? ।

उत्तर

परमेश्वर का ज्ञान कर्म स्वभाव और जीवमात्र उन के कर्म जगत् की सा-

मग्री (प्रकृति) और काल ये सब नित्य हैं. इन का आदि अन्त वृद्धि क्षय नहीं है। अर्थात् असंख्यवार पहिले भी इसी प्रकार की सृष्टि हो चुकी और अगणित वार आगे को भी होगी। ४३२०००००० चार अरब बत्तीस कोटि वर्ष तक सृष्टि के प्रकट अवस्था का नाम कल्प वा ब्राह्मदिन और इतने ही काल तक छिन्न भिन्न दशा का नाम ब्रह्मरात्रि महारात्रि प्रलय भी है जो तुम्हारे हमारे दिन रात्रि के सदृश बारम्बार होते रहते हैं।

१६ प्रश्न

जब कर्म ही प्रधान है देहीमात्र अपने २ कर्मों का ही फलभोगानुसार सुखी दुःखी है आगे को भी इसी प्रकार हुआ करेंगे तो फिर परमेश्वर की प्रार्थना उपासना करने से क्या प्रयोजन रहा क्या वन्दना करने से कोई ऋणी ऋण से और हिंसक, निन्दक,वचक पाप से मुक्त हो सकते है ?।

उत्तर

उस परमदयालु जगत्पिता परमेश्वर ने अपना नियम बोधार्थ ४ वेद अन्न औषध्यादि उत्तमोत्तम पदार्थ बनाकर लोकव्यवहार के लिये नेत्रादि ५ ज्ञाने-न्द्रिय हस्तपादादि ५ कर्मेन्द्रिय मन बुद्धि आदि दिये हैं जिसपर भी उस की सृष्टि का अपकार करो तो उस ने शिक्षारूप कर्मफल देना ही है. प्रार्थना का फल अ-भिमान की निवृत्ति धर्मज्ञान में प्रवृत्ति होना है उसने तुम से कब कहा वन्दना करने पर अनृण वा निष्पाप बना दूंगा।

१७ प्रश्न

सिंह, व्याघ्र, वृक, शृगाल, सर्पादि घातक जन्तु जो नित्य जीवहिंसारूप महापाप करते मांसाहारी हैं और ऐसे ही वानर भालू आदि नित्य कन्दमूल फल अन्न की चोरी करके निर्वाह करते हैं. वे फिर कभी नरयोनि पासक्ते है वा नही ?

उत्तर

जैसा कोई २ अन्यायी प्रजापीडक चोर बटमार आदि कालविशेष के लिये कारागार भेजे जाते हैं. वहा जा कर खान पान परिधान काम बदला जाता वा निकृष्ट मिलता है अवधि पूर्ण होने पर फिर वे अपने २ घर भी आ सकते है तैसा ही किसी २ उत्कट कर्म दोष से वृक्ष पक्षी कृमि पशु आदि निकृष्टयोनि

भोग करके शेष शुभाशुभ मिश्रित साधारण कर्मफल भोग के लिये फिर नरयोनि मिल सकती है सारांश यह है कि धर्माधर्म प्रतिपादनार्थ ब्रह्मज्ञान प्राप्त्यर्थ नरयोनि ही है। देखो दर्शन शास्त्र।

१८ प्रश्न

हम को कैसे ज्ञात हो कि हम और हमारे सहयोगी अमुक २ मित्र बान्धव पहिले उन २ योनि भुक्त के आये और इन २ कारणो से इतनी अवधि के लिये सयोग भया है ?।

उत्तर

विना सामान और उपाय के कोई कार्य्य सिद्ध नही हो सकता. इस मनुवाक्य का अनुष्ठान करो तो दर्प्पण में रूप के समान अपने और सहचर जीव जन्तुओं के पूर्व कर्म सयोग वियोग का कारण काल दृष्टि आवे गा।

वेदाभ्यासेन सततं शौचेन तपसैव च।
अद्रोहेण च भूतानां जातिं स्मरति पौर्विकीम्॥

बारम्बार अर्थ सहित वेदाभ्यास करने से कायिक वाचिक मानसिक शुद्धि से जितेन्द्रियता सर्दी गर्मी भूख प्यास हर्ष शोकादि सहनरूप तप से. प्राणीमात्र पर द्रोहभाव छोड़ देने से पूर्वजाति का ज्ञान हो जाता है।

१९ प्रश्न

एक मुल्ला के जबानी सुना था कि कुल इन्सानो की रूह बाद वफात बतौर हवालाती के जमा रहै गी कयामत के रोज इन्साफ होने पर अपनी २ पहिली शकल पर कबर से जी उठें गे. कुरान के मुसन्निफ की राय कैसी है।

उत्तर

सुनो भोले भाई हिन्दू लोगो मुसलमानो के मजहब में जाने पर तुम भी कयामत तक अन्धी कोठरी में हवालात रहो गे अभी कयामत होने के २३५९१४-७००५ वर्ष बाकी है फिर भी कयामत यानी दुनिया के खतम होने पर जब ज़मीन पानी आग के जर्रे हो आस्मान में डोलेंगे तब तुम्हें कबर की खबर भी न मिलेगी. बाद को भी प्रलयकाल तक उन्ही के सग रहना होगा. जिन के खुदा को करोड़ों अर्बोंबरस तक इन्साफ करने की सुध और फुरसत नहीं रहती

को आन घटाई में पड़ी रहै कुछ परवाह नही. हम तो कुरान और इञ्जील वगैरह मजहबी फर्जी किस्सो की बातो का यकीन नही करते ।

२० प्रश्न

कोई ऐसा भी कहते है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान् है इस सूक्ष्म स्थूल नाना प्रकार के जीव जन्तुओ का बनाना बढ़ाना घटाना मारना उस के लिये खेल है । इस में आप का श्रद्धा विश्वास कैसा है ? ।

उत्तर

खेल है कहने का तात्पर्य्य यह है कि उस की अनन्त सामर्थ्य के सामने सूर्य्य चन्द्रादि लोक तथा नाना प्रकार की देहरचना खेल अर्थात् लघु काम है । वह अपने नियमानुसार अनादिकाल से सृष्टिरचना मनुष्यो के कर्मानुसार शुभाशुभ फल देना इत्यादि जगत् के कार्य्य कर्ता आया इसी प्रकार अनन्तकाल तक करता जाय गा. वह सर्वज्ञ परमेश्वर उन्मत्त नही है जो बिना यज्ञरूप धर्म वा तप किये किसी को वैकुण्ठधाम वा मुक्ति दे देवे अथवा बिना जीवहिंसा शिष्ट-निन्दा आदि उत्पात किये किसी को नरक में धकेल देवे ।

२१ प्रश्न

हम प्रत्यक्ष देखते है कि धर्मात्मा विद्यावान् पुरुष तो सर्वथा दुःखी दरिद्री दृष्टि आते हैं और स्वार्थी धूर्त्त आदि दुष्टो की सम्पत्ति सन्तति द्वारा उत्तरोत्तर उन्नति होती जाती है परमेश्वर पुण्य पाप का फल तत्काल क्यों नही दे देता जिस में उचित प्रबन्ध हो जावे ? ।

उत्तर

विद्वान् धर्मी पुरुष ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी मानसिक सुख के सामने शारीरिक कष्ट को क्षणभंगुर समझते है सम्पत्ति पुण्य कार्य द्वारा शनै २ एकत्र होती पुण्य कार्य में ही व्यय हुआ करती है. जुवा प्रपञ्च आदि से पाप की कमाई चाहे जितनी जल्दी अधिक प्राप्त हो पापकर्म करा के दुःख में फसा के ही पिण्ड छोड़ती है, सन्तति बहुधा मछली कुत्ता बिल्ली पक्षी शूकर के अधिकतर होती है जो वृद्धावस्था में माता पिता को सुख सन्तोष नही दे सक्ती. यती ब्रह्मचारी सन्यासी उपकारी महात्मा संसार को ही कुटुम्ब मानते हैं ।

२२ प्रश्न

परमेश्वर को कोई सगुण कोई निर्गुण बतलाते हैं. मूर्त्तिपूजा द्वारा सगु-

णोपासना और पाठ जप द्वारा निर्गुणोपासना कही जाती है परन्तु निर्गुणोपासना गृहाश्रम छोड़ के उपरान्त सन्यासाश्रम में करनी चाहिये ऐसा कहते हैं वेद और धर्मशास्त्र में कब किस विधि से ईश्वराराधन करना लिखा है ? ।

उत्तर

(न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः)

देखो यजुर्वेद अध्याय ३२ का मन्त्र ३ अर्थात् उस परमेश्वर की प्रतिमा वा मूर्त्ति नहीं जिस का नाम महद्यश वा महादेव है वह निराकार निराधार निर्विकार निर्विघ्न निष्पक्ष इत्यादि विशेषण युक्त होने से निर्गुण और सृष्टिकारक धारक पालक मारक जड़ चेतन का संयोजक वियोजक होने से सगुण कहाता है उस की वन्दना प्रार्थना उस की वैदिकी आज्ञापालन से नित्य ही की जा सक्ती है ।

२३ प्रश्न

शंकराचार्य के मतानुयायी अद्वैतवादी जिन के मतग्रन्थ पञ्चदशी विचार चन्द्रोदय योगवाशिष्ठ है जीवात्मा परमात्मा को एक ही बतलाते अहम्ब्रह्मास्मि कह कर आत्मज्ञानी होना बतलाते है यह मत कैसा है ? ।

उत्तर

अद्वैतवादी भी एक प्रकार के प्रच्छन्न नास्तिक हैं क्योंकि शंकर स्वामी के शिक्षक गौड़पादाचार्य्य ने «ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या» ऐसे २ अनर्थक अनर्गल वाक्य अपनी कपोलकल्पना जल्पना से ईश्वर ही मायाग्रस्त जगत्रूप हो गया है इत्यादि बना लिये है जिन को इतना भी विवेक नहीं कि निराकार चेतन परमेश्वर साकार जगत्रूप जड़ द्रव्य कैसे बन सक्ता है सर्वव्यापक परमेश्वर के खण्ड वा अंश जीव क्योंकर हो सक्ते है वह माया कहा से आई जिस ने जीव ब्रह्म के सेवक सेव्यमान भाव को ही निर्मूल कर दिखाया । पण्डितवर भीमसेन शर्म्मा जी कृत माण्डूक्योपनिषद् की प्रस्तावना समालोचना देखो ।

२४ प्रश्न

एक पक्ष के लोग जीवहिंसा मांसभक्षण को महापाप समझते हैं द्वितीय पक्ष के इस को बलिदान कह कर पुण्य मानते हैं. वेद और शास्त्र की आज्ञा से मांसाशन पाप है वा नहीं ? ।

उत्तर

(परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्)

उपकार पालन पोषण के तुल्य पुण्य नही और अपकार मारण हिंसा निन्दा के नीचे और कोई पाप भी नहीं " न नीचोवधिकात्पर " मारने वाले से तले और कोई अन्त्यज चाण्डाल नही है मांसभक्षण की निष्ठा पर बलिदान के बहाने से घातक दीन दुर्बल निरपराधी पशु पक्षियो को मार उन के मांस से अपना मांस बढ़ाते है बलि नाम भेंट ग्रास मोदक लड्डू का है और दानशब्द का अर्थ देना है. मनुष्यादि पशु पक्षियो को अहार देना शास्त्रोक्त बलिदान कहाता है यवनों के देखा देखी शाक्तमत कल्पित हुआ है ।

२५ प्रश्न

कई एक मजहबी लोग कहा करते हैं कि जैसे बिना वसीला के राजा के पास नही पहुचा जा सक्ता और बिना सीढी के महल में नही चढा जाता तैसे ही बिना हमारे अवतार (पैगम्बर) का आश्रय लिये परमेश्वर के पास पहुचना दुर्घट है. आर्षग्रन्थो में क्या लिखा है ? ।

उत्तर

परमेश्वर सर्वज्ञ सर्वव्यापक सर्वद्रष्टा सर्वशक्तिमान् सर्वसाक्षी सर्वाधिस्वामी आदि अनन्त गुण युक्त होने से उस की प्राप्ति के लिये मृतक वा जीवित मनुष्य के वसीले की आवश्यकता नहीं है । बहुधा अनार्य्य अविवेकी अल्पज्ञ अधर्मी हठी दुराग्रही मजहबी मूर्ख लोग परमेश्वर को भी राजा वा बादशाह के तुल्य एकदेशीय पूछ २ के निर्णय करने वाला पक्षपाती पक्षघाती मूर्त्तिमान् आदि दोषयुक्त ठहराते है बुद्धिमानो को उन की बातों का विश्वास नही करना चाहिये ।

२६ प्रश्न

जैसा न्यायाधीश अपराधी को दण्ड देते समय कह देता है कि अमुक दोष के हेतु तुम इतने वर्ष मास के लिये कारागार भेजे जाते हो तैसा ही भगवान् भी दोषभागी को अन्धा लूला लंगड़ा कुष्ठी आदि रोगी बनाते पश्वादि योनि में जन्म देते समय क्यो नही विदित करा देता कि तुमने अमुक पाप किया था ? ।

उत्तर

त्रिकालदर्शी परमेश्वर ने वेदविद्या द्वारा आदि में ही प्रकाश करा दिया है कि अमुक २ कर्म का फल कालान्तर में ऐसा २ अवश्य मिलेगा. बारम्बार प्रत्येक मनुष्य से कहने जताने की आवश्यकता ही नहीं रक्खी. तिस पर भी जब २ मनुष्य चोरी हत्या झूठ आदि दुष्टाचरण करता है तो वह जगद्गुरु उस के चित्त में भी उद्वेग और जब २ धर्मसम्बन्धी कार्य्य करता है तब शिष्ट के मन में उत्साह हर्ष उत्पन्न करा देता है ।

२७ प्रश्न

हमारे विचार में तो मनुष्यादि जितने प्राणी अन्धे लूले आदि दीन दुर्बल हैं वे सब स्वकृत पापों के फलभोग किये कराये जाते हैं उन को अन्न वस्त्र से सहायता देना ईश्वराज्ञा भंग करना है क्या बँधुआ (कैदी) को सहायता पहुंचाने से राजा अप्रसन्न नहीं होता ? ।

उत्तर

(वृथा दानं धनाढ्येषु वृथा दीपो दिवाऽपि च)

धनाढ्य को दान देना. सूर्य्य के सन्मुख बत्ती जलाना निरोगी को ओषधि देना तृप्त को भोजन देना भरे कुण्ड कूप को भरना व्यर्थ है और श्रीकृष्ण जी ने भी भगवद्गीता में कहा है " दरिद्रान्भर कौन्तेय" हे कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर ! दरिद्रों को भरो अर्थात् प्रयोजनीय वस्तु दो अब प्रत्यक्ष प्रमाण भी सुनो उपरोक्त वृद्ध अन्धे लूले आदि दुःखी जन्तुओं को देख कर ही परमेश्वर की प्रेरणा से दया उत्पन्न होती है ।

२८ प्रश्न

हम सोचते है कि स्वर्ग नरक पूर्वजन्म पुनर्जन्म पाप पुण्य यन्त्र मन्त्र तन्त्र ये सब धोखे की टट्टी है लोक मर्यादा चलाने मूर्खों को डराने धमकाने अपना प्रयोजन सिद्ध करने के लिये प्रत्येक देश के स्वार्थी बलवान् मनुष्यों ने व्यवस्था (कानून) बना लिये हैं यदि ईश्वरकृत है तो कोई पुष्ट प्रत्यक्ष प्रमाण दीजिये ? ।

उत्तर

स्वर्ग=सुखस्थान. नरक=दुःखस्थान. पूर्व=पहिले पुनः=आगे को होने वाले. पाप=कुकर्म वा हत्या. पुण्य=सुकर्म. यन्त्र=सामान मन्त्र=विचार सोच. तन्त्र=

उपाय. ये सब उक्ति युक्ति से सिद्ध ही हैं । जन्म से ही रूपवान् बलवान् भाग्यवान् होना. उत्तम कुल में जन्म पाना प्राक्तन पुण्यकर्मों के फलभोग. और अन्धा लूला लँगड़ा खंजा बौना आदि अङ्गहीन कोढ़ी रोगी नीच कुल में जन्म पाना पूर्वसञ्चित पापकर्मों के फलभोग प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

२९ प्रश्न

बहुधा दो आदि वस्तुओं के संयोग से तीसरी वस्तु स्वतः उत्पन्न हो जाती है इस में सहस्त्रों प्रत्यक्ष प्रमाण है कर्त्ता धर्त्ता हर्त्ता की आवश्यकता नहीं परमेश्वर यह शब्द लोगों को डराने फुसलाने के लिये बनावटी उड़ान पाई नहीं हो तो क्या है ? ।

उत्तर

जड़ द्रव्यों को अपने आप संयोग वियोग कर सकने वा मिल जाने की शक्ति नहीं जोड़न तोड़ने वाला दृश्य वा अदृश्य चेतन पुरुष हुआ करता है । २ । ३ । ४ आदि पदार्थों का गुण मिश्रित वस्तु में भी बना रहता है छोटे बड़े जितने साकार पदार्थ जड़ चेतन घर बर्त्तन मूर्त्तिचित्र पृथिवी आदि लोकलोकान्तर और मनुष्यादि के शरीर इन सब का बनाने वाला वा अनायास हानिलाभ सुख दुःख उपस्थित करादेने वाला किसी महान्पुरुष का होना अनुमान से सिद्ध है ॥

३० प्रश्न

यह संसार क्या है संशय का आसार है कहीं किसी के लिये विष अमृत का सा गुण देता, किसी के अमृत ही विष हो जाता है कभी अकारण अकस्मात् हानि वा लाभ उपस्थित हो जाता है इस का कोई नियम ठीक निदान आप को ज्ञात हो तो कहिये ? ।

उत्तर

संसार में कोटिशः मनुष्य हैं इन के मुख्य कर तीन ही भेद है. तन्मध्ये दो प्रकार के मनुष्यों को तो जीवात्मा परमात्मा. लोक परलोक. पाप पुण्य. हानि लाभ. विद्या अविद्या बन्ध मोक्ष के निदान विषय में कुछ सन्देह नहीं होता जैसा पूर्ण विद्वान् और दूसरे निरे बालक मूर्ख शूद्र. परन्तु तीसरे प्रकार के अर्द्धशिक्षित पोपजालग्रस्त तुम्हारे सदृश जनों को अवश्य भ्रम हुआ ही करता है. भ्रान्ति रोग की शान्तिरूपी औषधि सत्सङ्गति वैदिकी शिक्षा दीक्षा है

३१ प्रश्न

जहा देखिये मनुष्यादि सब प्राणी अपने २ लिये सुख भोग के उद्योग में तत्पर है पर सब सुखी हो नही सकते प्रत्युत बहुधा दु खग्रस्त हो जाते हैं इस का क्या कारण है ? ।

उत्तर

प्रत्येक कार्य्य विधिपूर्वक सम्पादन किया हुआ अवश्य फलायमान होता है· निष्फल जाने का हेतु प्रमाद (भूल) अविद्या अविवेक है «कारणाभावात् कार्य्यभाव » प्रत्येक कार्य्य के सुधरने विगड़ने में कारण अवश्य होता है कार्य्यारम्भ से पहिले ही निदान और फल को शोच लेना ही चातुर्य्य पाण्डित्य कहाता है । परन्तु सब विवेकी दूरदर्शी नही होते. जैसा असाध्य रोगी औषधि को उगिल देता कुसंस्कारी शिक्षा ग्रहण नही करता. पाप कर्म द्वारा सचित द्रव्य पुण्य कार्य्य में नही लगाता. तैसा ही पूर्वजन्म का ऋणी क्लेश सहन द्वारा जब तक अनृण न होले सुखसाधन एकत्र नही करसकता है ।

३२ प्रश्न

मनुष्यादि जीवमात्र का रूप गुण स्वभाव दशा एक ही जाति वश में भी भिन्न २ प्रकार की देखी जाती. और बदलती भी रहती है इस की उत्पत्ति कैसे है ? ।

उत्तर

«कर्मवैचित्र्यात् सृष्टिवैचित्र्यम्» जन्मान्तरीय कर्मों की विचित्रता से सृष्टि नानारूपवती हो रही है. «मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना» प्रत्येक शिर में भिन्न २ प्रकार की मति हैं. जैसा ३२ द्रव्यो के योग से औषधि (बत्तीसा) प्रस्तुत किया जाने पर १ । २ द्रव्यो के भाग न्यूनाधिक्य हो जाने पर औषधि के गुण में भेद हो जाता है तैसा ही रूपभेद बुद्धिभेद दशाभेद के कारण सचित शुभाशुभ कर्मों की कमी वेशी जाननी चाहिये. जैसे बहुत सी औषधि मिश्रित के क्वाथ (काढ़े) में सब द्रव्यो के रस गुण मिले रहते हैं तन्मध्ये उग्र औषधि प्रधान हो जाती है तद्वत् कर्म समुदाय में सुख दु ख फल जानना ।

३३ प्रश्न

बन पड़े पर सब जीव जन्तु एक दूसरे को अपना भक्ष्य वा शत्रु जान कर

मारडालता वा खाही जाता है तो यह कैसे विदित हो कि हन्ताने बदला लिया है वा आगे को हत्या वा बुराई का फल पावे गा ? ।

उत्तर

सर्वोपकारी फलाहारी सत्यवादी जितेन्द्रिय दयावान् विद्यावान् विवेकी पुरुष जिस के शील स्वभाव को पड़ोसी लोग जानते हैं यदि ऐसे महात्मा से कभी किसी प्रकार की जीव हिंसा हो जाय. वा किसी की हानि हो जाय तो सब लोग यही समझते कहते है कि वह तो देवता है. उसी मृतक वा पापी के भाग्य में मृत्यु वा हानि बदी थी. और जो किसी स्वार्थी दुष्ट से अकस्मात् भी मर जाय वा काम बिगड़ जाय तो सब यही निश्चय करते हैं कि उसने अवश्य इच्छा से ही मारा होगा वा हानि पहुचाई बुराई का फल पावेगा ।

३४ प्रश्न

भूत प्रेत पिशाच जिन्न आदि बला भी कोई योनि है वा नहीं हैं तो उन का रूप किस प्रकार का है और नही हैं तो लोगो को क्यो लगते सताते पूजा पाने पर क्यों शान्त हो आराम देते है ? ।

उत्तर

भूत नाम अतीतकाल का है सो जड़ है. और सम्पूर्ण जीव जन्तु भूत ही है असख्यवार गुप्त प्रकट भये हैं प्रेत नाम विना जीव की मूर्त्ति का है. पिशाच नाम निर्दय वा मांसाहारी का है जिन्न शब्द का अर्थ जैन वा नास्तिक है बला नाम मानसिक रोग मृगी उन्माद का है. जिस क्लेश का निवारण. जिस दुष्ट का विसर्जन जिस प्रकार हो सके वही उस की पूजा विधि कहाती है· परन्तु प्राण वियोग भये उपरान्त जीव तो यमालय को गया. देह जल सड़कर नष्ट हुआ. भूत कहा से आया इस बात का विवेक हो जाना चाहिये ।

३५ प्रश्न

किसी मनुष्य के मरे उपरान्त उस के पुत्रादि का किया दशगात्र निर्माण शय्यादान श्राद्धतर्प्पणादि में दत्त द्रव्य मृतक को मिलने वा न मिलने के विषय में कोई दृढ़ विश्वास योग्य प्रमाण दीजिये ? ।

उत्तर

प्रमाण ३ प्रकार के हुआ करते है प्रत्यक्ष अनुमान और आप्त वाक्य. इन तीनो से वा तीनों में से एक करके भी जो विषय वा धर्म कर्म निर्णीत हो जाय

सी ही मान्य होता है. शरीर से आत्मा का वियोग हुए पश्चात् कब कहां किस योनि को पाया इस बात का पता न मिलने के हेतु कदापि किसी प्रकार मृतक पुरुष का दानमान से आदर सत्कार नही हो सक्ता. वेद और धर्मशास्त्र में भी जितने मन्त्र वा वाक्य हैं उन का अर्थ जीवित उपस्थित पितरों का श्राद्ध-तर्प्पण पालन पोषण बोधक है ।

३६ प्रश्न

वेद का शाब्दी अर्थ क्या है. वेद कितने हैं. कब २ किस २ ने बनाये. उन में क्या २ विषय हैं ? ।

उत्तर

वेद ईश्वरीय सनातनी विद्या है. इस में ऐतिहासिक कथा वार्ता वा किसी का जीवनचरित्र नही है वेद के ४ भाग है कल्प के आदि में अग्नि वायु सूर्य्य मन्वादि महर्षियो के द्वारा प्रजापति परमात्मा ने अपनी सृष्टि के उपकारार्थ प्रकाश किये हैं पुस्तकाकार पीछे बनाये गये हैं ऋग्वेद में अधिकतर पदार्थविद्या है यजुर्वेद में पठन पाठन राजप्रबन्ध विषय. सामवेद में आध्यात्मिक विद्या ध्यानावस्थित होने की विधि और अथर्ववेद में विशेष कर यन्त्र तन्त्र आग्नेयास्त्र मोहनास्त्र वारुणास्त्र विमान तार आदि कला कौशल बनाने की क्रिया है. शेष लोकोपकारी शिक्षा वा विद्या चारों वेदो में निश्रित हैं ।

३७ प्रश्न

पुराण शब्द का क्या अर्थ है. वेद और पुराण में क्या अन्तर है. पुराण कितने हैं. तन्मध्ये कौन २ मान्य. और कौन २ त्याज्य ? ।

उत्तर

"पुराणं भवतीति पुराणम्" प्रत्येक कार्य्य वा पदार्थ वा ग्रन्थ बनाये जाने के दिन तो नवीन कालान्तर में प्राचीन. पुराण. पुराना कहाता है "इतिहासः पुरावृत्तः" इतिहास ग्रन्थ ही पुराण कहाते हैं. मुख्य पुराण ब्राह्मण ग्रन्थ हैं जिन को कल्प गाथा नाराशंसी भी कहते हैं जो अब दुर्लभ से हैं. जिन में कल्पकल्यान्तर मन्वन्तर युगान्तर का परिवर्त्तन और आगे होने वाले मनुष्यो के आचरण सुधार के लिये महापुरुषो का जीवनचरित्र हो वे ही पुराण कहाते परन्तु पद्मपुराण गरुडपुराण शिवपुराण नारदपुराण भागवत आदि आधुनिक १८ पुराणाभास परस्पर विरोधी पाखण्ड ग्रन्थ हैं. वेद विषयक उत्तर पहिले दिया गया है ।

३८ प्रश्न

श्रीस्वामी दयानन्द जी का वेदभाष्यार्थ उन से पहिले टीकाकारों के अर्थ से क्यों नहीं मिलता ? ।

उत्तर

कलियुगारम्भ में वेद के भाष्यकर्त्ता श्रीवेदव्यास जी हुए. पश्चात् मौवर रावण सायणाचार्य्य महीधर ठाकुर विलशन भट्ट मैक्समूलर ग्रिफिथ साहब भी वेद के टीकाकार बन बैठे. तन्मध्ये. श्री स्वा० द० स० जी का भाष्य व्यास जी के भाष्य से ठीक मिलता है. भाषानुवाद इस में विशेष है. पाणिनि वात्स्यायन कणाद जैमिनि कपिल आदि महर्षिरचित व्याकरण निघण्टु मीमांसा की साक्षी अपने अर्थ में लिख दी है । " तदेवाग्निस्तदादित्येति यजुर्वेद " अध्याय ३२ मन्त्र १ अर्थात् उस परमेश्वर के अग्नि आदित्य वायु चन्द्रमा शुक्र ब्रह्म प्रजापति आप आदि गुणवाचक नाम व्याख्या भलीभाति दर्शाई है और जड़ वा भौतिक वस्तु अग्न्यादि के लिये सम्बोधन आ नही सकता. यह सिद्धान्त वाक्य है ।

३९ प्रश्न

देव वा देवता किन को कहते हैं वे कितने हैं उन का निवासस्थान कहां २ है और उन से जगत् का क्या २ उपकार होता है ? ।

उत्तर

"दिव्यगुणवत्यो देवताः" दिव्य वा उत्तम गुणो करके "युक्त होने से देवता शब्द बना. देवता दो प्रकार के है जड़ और चेतन अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चद्रमा देवता तथा, ५ ज्ञानेन्द्रिय ५ कर्मेन्द्रिय मन बुद्धि आदि ३३ देवता जड़ हैं । और माता पिता पितामहादि पितृ गुरु आचार्य्य तपस्वी धर्मोपदेशक वेदपारङ्गत आप्त पुरुष और गौ आदि महोपकारी पशु चेतन देवता कहाते हैं. जड़ चेतन दोनो प्रकार के देवताओ का भी देवता होने से परमेश्वर महादेव कहाता है. परन्तु आज कल के मूर्ख जिन २ पत्थरादि की मूर्त्ति और भूत प्रेतो को देवता करके मानते है उन से किसी का भी उपकार नही हो सकता ।

४० प्रश्न

सूर्य्य चन्द्रमा मंगल आदि नवग्रह मनुष्यजाति के व्यवहार में कार्य्यसाधक वा

बाधक होते हैं वा नही. हैं तो किस प्रकार और नही है तो प्रचार कब से कैसे हो गया ? ।

उत्तर

४ वेद और उन के सहयोगी ४ उपवेद ६ शास्त्र १२ उपनिषद् ६ दर्शनशास्त्र धर्मशास्त्र. सूर्य्यसिद्धान्त. और सिद्धान्तशिरोमणि आदि दैवज्ञप्रणीत सद्ग्रन्थों में तो कही भी लेख नही पाया जाता कि दूरवर्त्ती जड़ग्रह मनुष्यजाति के व्यवहार में कार्य्यसाधक वा बाधक होते हैं. प्रचार हो जाने का हेतु स्वार्थीजनो की जालसाजी है. हानि लाभ सुख दुःख यश अपयश के मूल कारण ग्रहदशा मानी जाने पर फिर कोई मनुष्य शुभाशुभ कर्मों का फलभागी नही हो सकता. मानो काठ के पुतले रह जाते है ।

४१ प्रश्न

हमारे पुरोहित जी मूर्त्तिपूजा को वेदोक्त सनातन कुलधर्म बतलाते और मन्दिर वा मूर्त्ति को ईश्वर वा किसी देवी देवता का स्मारक चिह्न बतलाते है ईश्वरप्राप्ति की सीढ़ी मानलेने पर क्या हानि है ? ।

उत्तर

५ । ५ वर्ष के दो बालको में से एक को नित्य विद्याभ्यास कराया जाय. दूसरे को केवल गणेश भैरव आदि किसी देवी देवता के नाम की प्रस्तरादि की निर्मित मूर्त्ति को धोना चन्दन रोली पोतना घण्टा हिलाना शङ्ख फूकना फूल पत्ती चढाना बताया जाय २५ वर्ष की अवस्था में परीक्षा लेने पर कौन ब्रह्मज्ञानी निकलेगा तुम ही विचार करलो हा यदि पाठशाला वा आचार्य्यमठ को देवता का मन्दिर. गुरुजी की मूर्त्ति वा सृष्टि को ईश्वर का स्मारक. शिक्षा कल्प व्याकरणादि शास्त्रो को तत्वज्ञान की सीढ़ी बतावे तो कोई दोष नही है ।

४२ प्रश्न

हरद्वार प्रयाग काशी बद्रीनाथ जगन्नाथ रामनाथ आदि स्थान जिन को हिन्दू लोग पुण्यक्षेत्र मानते. यात्रा स्नान दर्शन करने पर पाप से छूट जाने का विश्वास करते है क्या ये वेदोक्त शास्त्रोक्त नही है ? ।

उत्तर

यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कलत्रादिषु भौमइज्यधीः ।
यत्तीर्थबुद्धिः सलिलेषु कर्हिचित् जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः ॥

यह भागवत के दशमस्कन्ध का श्लोक है जो कोई वात पित्त कफ जनित देह में आत्मबुद्धि करता स्त्री पुत्रादि को अपने जानता. मट्टी पत्थर काष्ठ लोह पित्तल ताम्रादि से निर्मित मूर्त्ति को पूजता है. नदी बावरी सरोवर आदि जलाशय में तीर्थ बुद्धि करता है ये सब बुद्धिमान् विद्यावान् मनुष्यों में बैल. गधा के सदृश हैं. "सत्यव परमं तीर्थम्" धर्मशास्त्रे ।

४३ प्रश्न

निर्जला एकादशी जन्माष्टमी रामनवमी आदि तिथि पर्वकाल में जो लोग व्रत रहते लघन करते पूर्वक महापुरुषो की मूर्त्ति बनाय पूजते क्या उन का भजन कीर्त्तन निष्फल जायगा ? ॥

उत्तर

"जातिदेशकालसमयानवच्छिन्ना सार्वभौमा महाव्रतम्"

मनुष्य पश्वादि किसी जाति से किसी स्थान में काल विशेष के लिये भी अधर्माचरण नही करूंगा इस प्रतिज्ञापालन का नाम महाव्रत है "न सीदेत्स्नातको विप्रः क्षुधाशक्तः कथचन" अन्न जलादि भोजन सामग्री होते हुए गृहस्थ भूखा प्यासा न रहै. विभव होते जीर्ण मलिन वस्त्र न पहिने ये दोनो वाक्य तो महर्षियो के है एकादश्यादि के भीतर जितना अंश उक्त व्रत का किया जाय उतना तो अवश्य सफल होगा. शेष किसी मृतक महापुरुष के नाम की मूर्त्ति बनाय पूजना व्यर्थ है ।

४४ प्रश्न

हिन्दू लोगो के बीच विशेष कर ब्राह्मण जाति में परस्पर खान पान का मेल क्यों नहीं है बद्रीनाथ जगन्नाथ कारागार (जेलखाना) में तो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनो वर्ण एकत्र खा सक्ते हैं उन में किसी का भी कुल धर्म नष्ट नहीं होता ?

उत्तर

"विनाशकाले विपरीतबुद्धिः" वेद और धर्मशास्त्र में तो कई ठौर द्विजाति (ब्रा० क्ष० वै०) का खान पान में मेल बरन पाक क्रिया शूद्रकर्म लिखा है. यथाह मनुः—

धावको पाचकश्चैव षडेते शूद्रवत् द्विजाः

दीछने वा धोने पकाने वाले शिल्पकार द्विजशूद्रवत् हैं महाभारत पढ़िये. आदि से पाण्डवीय अश्वमेध यज्ञ होने तक तो तीनों वर्णों का एक ही पाक था. अब भी बदरीनाथ जगन्नाथादि बुद्धमत वालों के कल्पित स्थानो में एकत्र खाते हैं. कारागार में हार झखमार के खाना ही पड़ता है ।

४५ प्रश्न

शिखासूत्र धारण करने अर्थात् जातकर्मादि १६ संस्कारों से शारीरिक आत्मिक क्या २ लाभ हैं जब विद्वान् लोग संन्यासाश्रम ग्रहण करते हैं तो फिर वे जनेऊ चोटी क्यों उतार देते हैं ? ।

उत्तर

गर्भाधानादि अन्त्येष्टिकर्म (चिताग्दाह) पर्य्यन्त १६ संस्कार शारीरिक आत्मिक शुद्धि निमित्त किये जाते हैं जब तक लोगो के ये संस्कार विधिपूर्वक होते रहे और अब भी जिन २ कुलीन पुरुषो के घर हुआ करते हैं अथवा संस्कार समय में जिन २ बालको को सर्वोत्तम वैदिकी शिक्षा दीक्षा मिल जाया करती है वे मांसाहारी व्यभिचारी अनर्थकारी नहीं होते. जहा चूड़ोपनयन संस्कारोपरान्त भी भ्रष्टाचार वा जातिपतित हो जाय तहा उन के प्राक्तन जन्मान्तरीय मलिनसंस्कार वा पापकर्मो ने समय पाकर घर दबाया ऐसा विश्वास करना चाहिये

४६ प्रश्न

आर्य्य लोग मांस मदिरा प्याज लहसन आदि बलिष्ठ पदार्थों का निषेध क्यो करते हैं ? ।

उत्तर

"नो दयामांसभोजिनः" सिंह व्याघ्र वृक शृगाल कुक्कुर विड़ाल सर्प्पादि मांसाहारी श्वापद जन्तु जिन के नेत्र नख दन्तादि द्वारा पहिचान हो सक्ती हैं. उन के हृदय में दया धर्म का लेश नहीं होता जिन म्लेच्छ लोगो ने व्याघ्रादि से मांसभक्षण सीखा है वे भी तमोगुणी स्वार्थी होते है. मांस न खाने वाले गैंडा हाथी तथा दुग्ध घृताहारी पहिलवान मथुरा के चौबे आदि वीर पुरुष भी बलिष्ठ होते ही हैं, मनुस्मृति में लिखा है कि-

अभक्ष्याणि द्विजातीनाममेध्यप्रभवाणि च

उत्तर

"दशश्वजसमो वेशः" धोबी से १० गुणा नीच पराया स्वांग भरने वाला कहाता है हमारे विचार में देशहितैषी सज्जन महाजन साहित्य सम्मति करके राजकार्यालय (दफ्तर) प्रजा की बोली देवनागरी अक्षरों में और गवादि पशु-घात जिस से देश प्रति वर्ष अधोगति को प्राप्त हो रहा है. इन दोनों कार्यों में लाभ हानि स्वदेशाध्यक्ष (राजा) को समझाय जताकर प्रबन्ध करा लेवें तो प्रचलित रामलीला से कई गुणा धर्म और यश के भागी हो भावार्थ यह है कि श्रीरामचन्द्र महाराज के गुण ग्रहण करने से सर्वत्र रामलीला वा रामराज्य आ सक्ता है।

५२ प्रश्न

बालविवाह और नियोग विषय में साम्प्रत सर्वत्र आन्दोलन देखने सुनने में आता है. इस विषय में वेद और धर्मशास्त्र की क्या आज्ञा है ?।

उत्तर

" पञ्चविंशे ततो वर्षे पुमान्नारी तु षोडशे " २५ वर्ष तक पुरुष १६ वर्ष पर्यन्त स्त्री जितेन्द्रिय रहे तदुपरान्त कुल शील की समता देख विवाह किया जावे ऐसा धन्वन्तरि जी ने सुश्रुत में कहा है. "त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत" जब ३ वर्ष तक ३६ बार कन्या अपने पिता के घर में ही रजस्वला हो ले तब योग्यवर के संग स्वयवर विवाह कराया जावे. "मृते भर्त्तरि साध्वी स्त्री" पति के मरे पीछे यदि स्त्री ब्रह्मचारिणी रह सकै तो उत्तमा है. व्यभिचार कराने से उसी कुल में देवर के संग पुनर्विवाह कर लेवे "द्वितीयो वरः देवरः" ये दोनो वाक्य मनु जी के हैं. नियोग शब्द का अर्थ आपद्धर्मे रक्षार्थ सन्तानार्थ उत्तम कुल के सुशील पुरुष का वीर्य्य ले के गर्भाधान करा लेना।

५३ प्रश्न

हा जी हिन्दू जाति में भी तो बहुतेरे लोग भेडी बकरी बराह हरिण पाडा बाराहसिंगा बनकुकुडी जलकुकुडी बटेर कबूतर तीतर पण्डुक गौरय्या मछली का मास खाते ही है केवल गौ बैल के ही मास खाने मारने से क्यो चिढ़ते है हत्या तो सबी जन्तुओ की लगती होगी और मास भी एक सा ही होता होगा ?।

उत्तर

वैद्यकशास्त्र में पृथक् २ जन्तुओ के मास में भिन्न २ लक्षण दोष लिखे है. और हत्या भी गुण दोषानुसार न्यूनाधिक्य होता है पाई से लेकर मुहर तक मिलने वा खोया जाने में हर्ष शोक तुल्य नही होता. साराश यूं है कि आर्य्य-सन्तान जो अब हिन्दू कहाते हैं उन में भी कोई २ उपरोक्त पशुपक्षियो के मांस भक्षक शाक्त मतावलम्बी वामाचारी म्लेच्छ लोगो के देखा देखी आधे सूचर अवश्य हो गये हैं. गवादि सब जन्तुओ के मासभक्षक को पूरे राक्षस कसाई जो कहो सो ठीक ही है ।

५४ प्रश्न

तमाकू का खाना पीना शास्त्रानुकूल है वा नही इस के सेवन से प्रत्यक्ष क्या २ हानि लाभ है ? ।

उत्तर

तमाकू चरस मग गांजा अफीम मदिरा आदि मादकद्रव्य सेवन का शास्त्र में सर्वथा निषिद्ध ही पाया जाता है इसी लिये विद्वान् महात्मा परमहंस योगीश्वर जितेन्द्रिय धार्मिक सज्जन कुलीन पुरुष इन उपरोक्त मदकारी कुद्रव्यो का स्पर्श नही करते. इन का प्रचार व्यवहार प्राय' अनार्य्य मूर्ख विषयी मागते नीच राड भाड सेवक सदा व्यसनी आदि लोगो के बीच पाया जाता है' पद्मपुराण में लिखा है कि "धूम्रपानरतं विप्र०" हुक्का पीने वाले ब्राह्मण को दान देने वाला यजमान नरक में जाता है. ब्राह्मण गांव का सूअर बनता है और मुख से दुर्गन्ध का आना. आय का बडा भाग इस में व्यय होना प्रत्यक्ष हानि है गुण तमाकू का मादक किञ्चित् वातनाशक है ।

५५ प्रश्न

वर्त्तमान काल में जहा तहा साधू सन्त बहुधा मन्दिर तीर्थों के आश्रय पाये जाते सब अपने २ मत की कहते हैं. तन्मध्ये चोखे योगी पुरुषों की पहिचान क्या है?

उत्तर

साधयति स्वकीयानि परकीयानि च कार्य्याणि स साधुः

जो विद्वान् सज्जन सुशिक्षा सदाचार द्वारा अपना और जगत् का उपकार

वृद्धि होना मुक्ति का साधक है. विशेष व्याख्या सत्यार्थप्रकाश तथा वेदभष्या में देख लेना ।

६० प्रश्न

बहुधा हिन्दूलोग ३ ही पीढी के मृतक पितरो का श्राद्ध तर्पण वर्षान्तर्गत १ । २ वार करते हैं. कोई ऐसी भी विधि है जिस में जन्मान्तरीय सब पितरो का श्राद्ध हो जावे और वे पूर्वज दत्तद्रव्यं भोज्य पा सकै ?

उत्तर

४ वेद. ६ शास्त्र ६ दर्शन १२ उपनिषद् आदि ऋषिप्रणीत वाक्य और प्रत्यक्ष प्रमाण अनुमान तथा युक्ति और तर्क से भी जीवमात्र का आवागमन मरे उपरान्त कर्मानुसार बारम्बार उच्च नीच योनि में जन्मपाना सिद्ध है ही और अर्थापत्ति से यह भी निश्चित हो सक्ता है कि स्थावर जगम इन्ही दो प्रकार की सृष्टि के भीतर पूर्वज पितर कुटुम्बीजन हैं. यथोपस्थित सब का आतिथ्य आदर सत्कार करने से असंख्य पितृ मित्र बान्धवो का श्राद्ध तर्प्पण हो सक्ता है और वे सदेह जीवजन्तु खा पी ले दे भी सक्ते हैं ॥

६१ प्रश्न

साम्प्रत आर्य्य धर्मातिरिक्त भारतवासी हिन्दुओं का धर्म क्या है. उस के अनुष्ठान में क्या हानि है ? ।

उत्तर

वेद और धर्मशास्त्रानुसार युवावस्था में स्वयंवर विवाह न होने से प्राय पाच कोटि के अनुमान बाल विधवा हिन्दू सम्प्रदाय में ही विद्यमान हैं गर्भपात के कारण लोक में अपयश और राजदण्ड के भागी हिन्दू ही होते हैं मूर्त्तिपूजा भूतप्रेत पूजा का आश्रय लिये शास्त्रार्थ करने पर अन्यमत वालो से पराजय जाति पतित मुसलमान ईसाई भी हिन्दू होते हैं और हिन्दू समुदाय के बीच परस्पर विरोधी पौराणिक शैव शाक्त वैष्णवादि मतमतान्तर की फूट से खान पान आत्मिक धार्मिक मेल नही रहता रामलीला कृष्णलीला आदि स्वाग बनाने में मुसलमानो के हाथ हिन्दू ही मार खाते कारागार जाते. राजदण्ड भरते हैं इत्यादि सैकडो प्रकार की हानि प्रत्यक्ष ही है ।

६२ प्रश्न

जीवात्मा स्वतन्त्र है वा परतन्त्र. यदि स्वतन्त्र है तो उस को सब कार्य्य सिद्ध करने की सामर्थ्य होनी चाहिये. और जो परतन्त्र है तो वह पाप पुण्य-कर्मों का फलभागी नही हो सक्ता ? ।

उत्तर

मनुष्यमात्र सञ्चित शुभाशुभ कर्मवशात् स्वाधीन और पराधीन भी है. अर्थात् सामर्थ्यवशात् कर्म करते समय स्वाधीन पीछे फल भोग के समय पराधीन होजाया करते है जैसा किसी से ऋण लेते चोरी व्यभिचार मार पीट दान मान करते समय तो स्वाधीन पश्चात् ऋण चुकाने चोरी का फल राजदण्ड व्यभिचार का फल राजरोग भोगने दान मान का फल सुख वा स्वर्गवास. हत्या निन्दा का फल दुःख वा नरकवास करते सहते समय परवश हो जाता है . इस उत्तर के प्रत्यक्ष दृष्टान्त अन्धे लूले लँगड़े कोढ़ी वृक्षादि स्थावर. घोटकादि पशु और कृमि कीट है ।

६३ प्रश्न

हमें कैसे मालूम हो कि परमेश्वर सर्वव्यापक ज्योतिःस्वरूप है कोई ऐसी विधि बताइये जिस से हम उस की ज्योति अन्धकार में भी देख सकें ? ।

उत्तर

" स्वाध्याययोगसम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते ,,

४ वेद तदनुकूल व्याख्यारूप वेदाङ्ग शास्त्रो का पढ़ना सुनना विचारना स्वाध्याय कहाता है. और यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि इन ८ साधनो का अनुष्ठान योग कहाता है । स्वाध्याय और योग दोनो के संयोग वा मेल से निर्मल ज्योतिष्मती बुद्धि द्वारा सर्वव्यापक परमात्मा देखा वा जाना जाता है परमेश्वर मूर्त्तिमान् पदार्थ वा मनुष्य पशु पक्षी के सदृश नही है जो आज तक कही किसी ने भी इन भौतिक नेत्रो से देखा हो । उस का बोध हो जाना ही देखना जानना कहाता है ।

६४ प्रश्न

परमात्मा जीवात्मा में भेदाभेद क्या है ? ।

उत्तर

पहिले परमात्मा जीवात्मा का साधर्म्य बतलाते हैं. ।

परमात्मा	निराकार है ।	जीवात्मा भी	निराकार है ।
तथा	चेतन है ।	तथा	चेतन है ।
तथा	अनादि है ।	तथा	अनादि है ।
तथा	नित्य है ।	तथा	नित्य है ।
तथा	गुणकर्म वाला है ।	तथा	गुणकर्म वाला है ।

अब वैधर्म्य वा भेद वर्णन करते है ।

परमेश्वर	सर्वज्ञ है	जीव	अल्पज्ञ है ।
तथा	सर्वव्यापक है	तथा	एकदेशीय है ।
तथा	अजन्माअमृत्यु है	तथा	जन्ममरणधर्मा है ।
तथा	सेव्य वा स्वामी है	तथा	सेवक वा दास है ।
तथा	केवल एक ही है	तथा	असंख्य हैं ।

इत्यादि गुणानुवाद आत्मज्ञानी पुरुषो ने किया है ।

६५ प्रश्न

साम्प्रत संसार में अधिकांश मनुष्य बुद्धमतावलम्बी सुने जाते हैं अमरकोश में भी लिखा है कि " सर्वज्ञ. सुगतोबुद्धो, तथा, मारजिल्लोकजिज्जिन." अधिक मनुष्यों की सम्मति छोड़ तुम्हारी बात क्यो मानें ? ।

उतर

संसार में सज्जन विद्वान् परमार्थी पुरुष छोडे और दुर्जन मूर्ख धूर्त स्वार्थी अधिकतर हैं अमरसिंह भी स्वयम् बुद्धमतान्तर्गत जैनी था क्यो नही अपने नायक बुद्ध जिन की प्रशंसा करता. नीति में कहा है " मृगामृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति " वनवासी वनवासियो के संग. गवादि पशु और पक्षी स्वजाति के संग जाते हैं. मूर्ख मूर्खों की चाल चलते विद्वान् विवेकी सज्जन महर्षि महापुरुषो की संगति सम्मति स्वीकार करते. दुष्ट और शिष्ट पुरुषो का मेल नहीं हो सकता देवासुर संग्राम प्रकाश अन्धकार के सदृश सर्वत्र सदा ही बना रहता है ।

६६ प्रश्न

ईसाई लोग ईसा को परमेश्वर का पुत्र और पिता पुत्र पवित्रात्मा त्रिगुणात्मक होना बतलाते है आप के मुख से भी व्यक्तिशक्ति सुना चाहते हैं ? ।

उत्तर

बुद्धिमान् विद्यावान् पुरुषों ने ईसूपरीक्षा बायबिल की पोल आदि बहुत प्रकार के पुस्तक बना दिये हैं जिस में ईसामसीह की वशावली और उत्पत्ति से लेकर मरण पर्यन्त का स्पष्ट समाचार लिखा है । संक्षेप यह है कि ईसामसीह की मय्या मरियम का यूसफ बढ़ई से सगनई होने के पहिले गर्भिणी हो जाना. बड़ा होने पर युवावस्था में ईसू का ३० के विज्ञापन में पकड़ा जाना. मुख में थूका जाना. हाथ पाव में कील ठोक काटो का मुकुट पहिराया जाना दो चोरो के सग क्रूस पर ठोक मारा जाना बायबिल बयान करता है हमने कोई दोषारोपण नही किया ।

६७ प्रश्न

मुसलमान् लोग अपने पैगम्बर हजरत मुहम्मद् की बड़ी तारीफ करते कुरान को कलामुल्ला बतलाते हैं इस बारे में भी आप को कुछ हाल मालूम है ? ।

उत्तर

सन् ५६९ में अरब देश के बीच कुरैश वश में अबदुल्ला की आमिना स्त्री से महम्मद् नामक मनुष्य उत्पन्न हुआ. जब महम्मद् पेट में था बाप मर गया पैदा होते ही ७ दिन में मा भी मर गई बादी का दूध पिलाया गया. जब कुछ बड़ा हुआ बकरी चराते हुए फरिश्ते उतरे मोहम्मद् का पेट चीर आत दिल धो के फिर वैसा ही कर दिया. ऐसा ४ बार हुआ २५ वर्ष की अवस्था में मोहम्मद् ने ४० वर्ष की खदीजा स्त्री के सग जिस का सेवक था निकाह किया फिर ४० वर्ष की अवस्था में खुदा का पैगम्बर बन बैठा. मूर्खों को वश में लाकर कुरान का मत चलाया इत्यादि लिखा है (देखो मोहम्मद् का जीवनचरित्र) ।

६८ प्रश्न

जगत् के निस्तारार्थ परमेश्वर बारम्बार रूपान्तर से पृथक् २ देशो में समय २ पर अवतार लेता है वा नही यदि नही लेता तो जो २ आश्चर्य कर्म कृष्णादि अवतारो ने कर दिखाये. सब क्यो नही कर सक्ते ? ।

उत्तर

अवतार शब्द का अर्थ उतरा हुआ स्पष्ट है. प्रत्येक साहसी उत्साही उद्योगी चतुर मनुष्य हो सक्ता है. परन्तु निराकार सर्वव्यापक परमेश्वर का जन्म

मरण न कभी हुआ न होगा. साराश यू है कि महाभारत के घोर युद्ध से इधर वैदिकी शिक्षा दीक्षा अध्ययनाध्यापन प्रणाली नष्ट भ्रष्ट होजाने से लोगो की बुद्धि डामाडोल होने लगी. तभी से पराक्रमी चतुर मनुष्य को (चाहै वह स्वार्थी हो चाहै परमार्थी) सर्वसाधारण लोग ईश्वरावतार मानने लगे और आश्चर्य कर्म (ईश्वरीयनियम विरुद्ध झूठीं बातें) अवतार के देहान्त पीछे लिखे गये है।

६९ प्रश्न

सब लोगो के चित्त से रागद्वेषादि द्वन्द्वरोग निकल कर परमेश्वर का नियम गुण भय समा जाय. जैसा कि सत्य युग में होना बतालते है वैसा ही समय का आना दैवाधीन ही है वा मनुष्याधीन भी है ? ।

उत्तर

पितृसत्तक उपदेशक पुरुषो के ३ भेद हैं जो वसुस्वरूप रुद्रस्वरूप आदित्य-स्वरूप कहाते है । श्रीस्वामीदयानन्दसरस्वती जी के सदृश पूर्णविद्वान् जितेन्द्रिय महर्षि सत्यधर्मोपदेशद्वारा सत्ययुग को लासक्ते अर्थात् कलियुग नाम क्लेशमय अविद्यान्धकार को मिटाय विद्यार्कप्रकाश द्वारा सब को सुखी बनाय सत्ययुग दिखा सक्ते हैं "कि दूर व्यवसायिनाम्" परिश्रमी साहसी दूरदर्शी विवेकी पुरुष के लिये कोई कार्य वा पदाधिकार दूर नही है "एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति" एक ही चन्द्रमा अन्धकार हटा देता है ॥

७० प्रश्न

एक पौराणिक पण्डित जी के मुख सुनाथा कि यवन राज्य के पीछे ९ पीढ़ी तक गोरखड का राज्य होगा. तत्पश्चात् मौन जाति का राज्य आवेगा ऐसा भागवत में लिखा है. इस विषय में आप का विश्वास निश्वास कैसा है ?

उत्तर

यह बात बोपदेव के चेले भागवतियो से पूछनी चाहिये कि मौन कौन किस देश किस जाति किस वश में कब उत्पन्न होगा हम तो नीतिशास्त्र के अनुगामी हैं ।

उद्यमं साहस धैर्यम् बलं बुद्धिः पराक्रमः।
षडेते यस्य विद्यन्ते तस्माद्देवोऽपिशंकते ॥

उद्यम साहस धैर्य बल बुद्धि पराक्रम ये ६ गुण जिस माई के पूत में विद्यमान रहते हैं उस से राजा भी डरता. अर्थात् वह नृसिंह दुष्टो के ताडन शिक्षो

के पालन द्वारा सार्वभौम राजा हो सक्ता है जिस के उदाहरण महाराज रणजीतसिंह आदि हो गये, होवेंगे ॥

७१ प्रश्न

पशु पक्षी वृक्ष फल कन्द मूल अन्नादि पदार्थ भगवान्‌ने मनुष्य जाति के सुख भोग निमित्त बनाये है इस लिये मनुष्य के सिवाय और किसी जन्तु की हत्या क्योंकर लगती वा कहाती है ? ।

उत्तर

"धर्मेण हीना पशुभिः समानाः" न्याय नीति दया धर्म सत्य परोपकार ये सब एकार्थक हैं एवम् अन्याय अनीति निर्दयता अधर्म असत्य स्वार्थसाधन ये भी परस्पर पर्य्यवाची है हत्या विशेष कर जरायुज अण्डज स्वेदज इन्हीं ३ प्रकार के चलने फिरने वाले लोकोपकारी जन्तुओं को वा मरने के भय से भागने बचने का उपाय करने वालों को कहाती है. यद्यपि सिंह व्याघ्र सर्प चोर खटमल वृक्ष वल्ली अन्नादि पदार्थों के कूटने पीसने भूनने में भी किञ्चित् है ही तन्निवारणार्थ पञ्चमहायज्ञ है । देखो आर्य्यसिद्धान्त ॥

७२ प्रश्न

एक पक्ष के लोग स्त्रीजाति को पढ़ाने से व्यभिचार की शंका होना मानते दूसरे पक्ष के स्त्री शिक्षा को लोकोपकारी मानते है. कौन पक्ष लाभदायक है ?

उत्तर

अपने यहाँ के ऋषिपत्नी गार्गी मैत्रेयी विद्योत्तमा लीलावती तथा दमयन्ती आदि सुलक्षण पतिव्रता राणियों के जीवनचरित्र और निज घर के आयव्यय लिखने योग्य व्यवहार विद्या तथा वेद और धर्मशास्त्र का सार. पाक क्रिया वस्त्र सीना पिरोना अवश्य पढ़ाना सिखाना चाहिये परन्तु जगत् के आरम्भ में केवल आदम और हव्वा एक ही जोड़ा स्त्री पुरुष उत्पन्न हुए थे. उन्ही के बेटे बेटियों का परस्पर विवाह हुआ था और लूत की दो लड़कियों ने अपने बाप से दो लड़के उत्पन्न करा लिये ऐसी कथा ईसायनों के द्वारा कभी न सुनवानी चाहियें ।

७३ प्रश्न

एक ही माता पिता के पुत्रों में मुख्य कर यमल भाइयों में ही रूप बल

पराक्रम शील विद्या बुद्धि तेज में भेद क्यो हो जाता है. वीर्य्य आहार क्षेत्र तो उन का एक ही था ? ।

उत्तर

जो काम साझे में किया जाता है उस का फल भोग भी काल विशेष के लिये परिश्रम और पूंजी के अनुसार साझे में हुआ करता है जिस मनुष्य के सग जिस २ का जिस प्रकार साझा वा लेन देन व्यवहार वर्त्ताव जहा पर हुआ करता है उसी प्रकार वहा पर उसी प्रमाण (लहना) सर्वान्तर्यामी न्यायाधीश की प्रेरणा से प्राप्त हो कर पुन पृथक् २ हो जाया करते है वीर्य्य और आहार सगति के हेतु रूप बल बुद्धि विचार कुछ मिल भी जाते है प्रारब्ध कर्म वासना के कारण वैधर्म्य भी रहता है । (देखो साख्यदर्शन शास्त्र)

७४ प्रश्न

होली की उत्पत्ति विषय में भी कुछ कहिये ? ।

उत्तर

यह त्योहार शास्त्रोक्त सनातन धर्म कर्म सर्वसम्मत तो है नही. और न इस के वर्त्ताव से किसी को कुछ लाभ हो सकता. प्रत्युत रग भस्म धूलि से वस्त्रनाश रांड भांडो की पूजा में धन नाश मदिरा भंग चरस माजून आदि के सेवन निर्लज्ज सम्भाषण से बुद्धि बल प्रतिष्ठा का नाश अवश्य होता ही है इसी लिये सज्जन विद्वान् विवेकी कुलीन आर्य्य पुरुष इस दुराचार के धोरे नही जाते। परन्तु पौराणिक लोग होलिका नाम राक्षसी को हिरण्यकशिपु की वहिन. अबीर गुलाल को उस रांडी के भस्म सदृश बतलाते हैं जो प्रल्हाद् नामक हरि-भक्त को जलाने के उपाय में आप ही भस्म हो गई थी. इतना भी नही शोचते जो होली सो होली अब क्या ।

७५ प्रश्न

दिवाली का मूल कारण वृत्तान्त कैसा है ? ।

उत्तर

जब महाराज रामचन्द्र विजयादशमी के दिन लका नाम द्वीप को जीत रावण को मार वहा का राज्य उस के भाई बिभीषण को दे १४ वर्ष बनवास के अन्त में अमावास्या के दिन अयोध्या में आय पहुचे तो प्रजाने उस शुभ दिन

को उत्सव मान कर घर २ दयोतिप्रज्वलित की. वह स्मारक दिन अबतक दीपावलि नाम से पुकारा जाता है। परन्तु कार्त्तिकमाहात्म्य और शिवपुराण में जो २ असम्भव परस्पर विरोधी ईश्वरीय नियम विरुद्ध कल्पित कथा लिखी हैं उन्हें भुलाने जुआरूपी महाअनर्थ का हेतु जो निषिद्ध निकृष्ट कर्म है उसे छुटाने के लिये कोई उग्र उपाय कठोर दण्ड नियत होना चाहिये कहावत प्रसिद्ध है कि लातों के हुडक्कुर बातों से नहीं मानते।

७६ प्रश्न

"ओं सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्"

हमारे पुरोहित जी इस मन्त्र से परमेश्वर को मूर्त्तिमान् होना सिद्ध करते हैं. यह वेद मन्त्र नहीं है क्या ?।

उत्तर

पुर् नाम ब्रह्माण्ड और शरीर का भी है उस में सर्वत्र व्याप्त होने से परमेश्वर को पुरुष कहते हैं. सहस्र नाम हजार वा असख्यात का भी है जिस के अन्तर्गत सब जगत् के असख्यात शिर नेत्र पग ठहरे हैं उस को सहस्रशीर्षा सहस्राक्ष सहस्रपात् भी कहते है क्योंकि वह अनन्त है जैसे आकाश के बीच पृथिव्यादि लोक और सब पदार्थ रहते है आकाश सब से पृथक् और सब से मिला भी है परन्तु किसी के बन्धन में नहीं आता. इसी प्रकार परमेश्वर को भी जानो परन्तु कोई मूर्त्तिमान् जन्तु सर्वज्ञ सर्वद्रष्टा सर्वव्यापक अजर अमर इत्यादि विशेषण युक्त नहीं हो सक्ता। देखो यजुर्वेद के अध्याय ३१ के भीतर पुरुषसूक्त को।

७७ प्रश्न

पूर्वकाल की अपेक्षा अब भूमि अधिक जोती बोई जाती है तौ भी भारतवासी चौथाई प्रजा भूखों मरती है इस का क्या कारण होगया ?।

उत्तर

आर्य्यावर्त्त नामक साप्ताहिक विश्वासी पत्र द्वारा २८ दिसम्बर ९५ के लेख से प्रकट हुआ कि केवल यूरोपियन लोगों के खाने के लिये प्रति दिन हिन्दुस्थान में ६० हजार गाय मारी जाती है मुसलमानों के लिये अलग रही त्राहि माम् २, मनुष्यों का जीवनाधार दूध दही मठा मक्खन घी गोबर खाद कण्डे खेती

हल गाड़ी तथा अन्नादि पदार्थों के उत्पत्ति कारण सहायक बहुधा ये ही पशु हैं, १ गौ मारी जाने पर एक ही बार ३० असु भरे गे जीती रहने पर केवल दूध द्वारा ही अनुमान ३०००० मनुष्यो को भर सक्ती है निदान गोवधरूप अविचार ही इस देश के निवासियो की दुर्दशा का कारण जान पड़ता है ।

७८ प्रश्न

जिस का पितृ पैतामहिक पदाधिकार जाता रहने से प्राप्ति कम हो गई हो, कुटुम्ब बढ़ गया हो वह कुलीन पुरुष निर्वाह कैसे करे ? ।

उत्तर

"आचार: कुलमाख्याति" आचारानाचार से ही कुलीनाकुलीन की परीक्षा होती है. जितेन्द्रिय रहने स्वदेशीय दृढ़ स्वल्पमूल्य वस्त्र पहिरने दाल चावल शाक कन्दमूलादि साधारण भोजन करने सहन शील होने प्राप्ति के अनुसार आवश्यक व्यय करने युक्तिपूर्वक व्यवहार करने से किसी का भी कुलधर्म नष्ट नही हुआ. न किसी का दिवाला होता इसी विषय में नीति में कहा भी है (क.काल: कानि मित्राणीनि" समय कैसा है. मित्र कौन कैसे है यह. कौन कैसा देश है. मेरा आय व्यय क्या है मैं कौन हूं मेरी शक्ति कितनी है इतनी बातें प्रतिक्षण स्मरण वा ध्यान में रखे तो कभी न हारे ।

७९ प्रश्न

परमेश्वर प्रजापति त्रिकालज्ञ धर्मराज दीनबन्धु इत्यादि विशेषणयुक्त नामो से पुकारा जाता है प्रजापीड़क सर्वभक्षक दुर्जनो को कभी २ राज्याधिकार क्यो दे देता है ? ।

उत्तर

प्रत्येक मनुष्य पहिले २ जन्मो की कमाई पाप पुण्य कर्म का फल सुख दु ख भोग करे जाता और आगे को स्वमतिशक्ति अनुसार शुभाशुभ कर्मरूप खेती भी करे जाता है. आजन्मान्त मनुष्यादि जितने जन्तुओ का उपकार अपकार करना है तन्मध्ये किसी २ को तो बदला देना किसी २ के ऊपर भलाई बुराई का बीज बोना है. यूं ही ससारचक्र प्रवाह से चला आया. आगे को भी चलता रहै गा. निर्दोष सत्वगुणी तत्वज्ञानी मुमुक्षु पुरुष राज्याधिकारी बहुत ही कम कही २ कभी २ उत्पन्न हुआ करते है । देखो (विचारचन्द्रोदय) ।

८० प्रश्न

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यःकृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ यजुर्वेद ।

ब्रह्माजी के मुख से ब्राह्मण भुजा से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य पांव से शूद्र उत्पन्न हुआ, यह तो सीधा अर्थ है, आप कैसा अर्थ समझे हुए हो ? ।

उत्तर

ब्रह्माजी भी तो पुरुष विशेष नरयोनि ही थे उन के मुखादि से ब्राह्मणादि वर्ण उत्पन्न हुए तो पशु पक्षी वृक्षादि नानाप्रकार के जीव जन्तु कहां २ से उत्पन्न हुए, यदि ब्रह्मा को स्वयम्भू परमेश्वर मानो तो निराकार के जंघादि अवयव नहीं हो सकते इस लिये सीधा अर्थ तो यूं है—उस पर ब्रह्म के नियमानुसार विद्यादि उत्तम गुणों से युक्त ब्राह्मण वर्ण बल पराक्रमादि सहित क्षत्रिय, खेती व्यापार पशुपालनादि मध्यम गुणों से वैश्य मूर्खता लिये परसेवी शूद्र उत्पन्न हुआ इत्यादि वहां प्रसंग देखो ।

८१ प्रश्न

पिता की आज्ञानुसार श्रीमहाराज रामचन्द्र जी भी पिता के देहान्त के पीछे १४ वर्ष बन में रहे हम भी अपने पिता की आज्ञानुसार उन के मरे पीछे श्राद्ध तर्पण करें तो क्या हानि है ? ।

उत्तर

राजा दशरथ जी ने तो राणी केकई से वचन हार हो राज्यशासन भरत को दिलाने के लिये रामचन्द्र जी को बनवास की आज्ञा दी थी, भरत जी ने पिता और ज्येष्ठ भ्राता दोनों की आज्ञा का पालन किया, श्रीरामचन्द्र जी के पादत्राण राजसिंहासन में स्थापित कर राजप्रबन्ध किया आप के पिता ने देह छोड़े उपरान्त अपने नाम का अन्न वस्त्र द्रव्य सण्डे मुसण्डे गुण्डे मूर्ख धूर्त लोगों को दिलाने पर अपनी तृप्ति मानी है जो सर्वथा असम्भव है यदि दान कराने से प्रयोजन था तो विद्वान् सुशील दीन दुर्बल जन्तुओं को दिलाया होता ।

८२ प्रश्न

नीतिशास्त्र में कहा है कि "सन्ततिः पुण्यमाहुयाति" पिता के पुण्य को

सन्तति जता देती है अर्थापत्ति से पुत्र का किया श्राद्ध पिता पितामहादि को भी फलना चाहिये. फिर श्राद्ध तर्प्पण का खण्डन क्यो ?

उत्तर

त्रिकालज्ञ न्यायाधीश परमेश्वर धर्मी के आत्मा को धर्मी पुरुष के घर में धर्म कार्य्य प्रतिपादनार्थ वा सुख भोगार्थ प्रेरित करता है. सुलक्षण सुपात्र सन्तातिद्वारा माता पिता को सुख सन्तोष यश मिलता है और पापिष्ठ को पापी वा नीच के घर में दुःखभोग निमित्त जन्म दिया करता है. कुलक्षण कुपात्र सन्तान से दुःख शोक अपयश मिलता है. परन्तु मरे हुए माता पिता गुरु आचार्य्यादि को पुत्र वा शिष्य किसी प्रकार श्राद्ध तर्प्पण द्वारा तृप्ति भुक्ति मुक्ति किसी युक्ति से नही करा सक्ते हैं ।

८३ प्रश्न

आर्य्य लोगो ने पुरानी रीति नमस्कार पालागन राम राम आदि अभिवादन जिस से छोटे बड़े का बोध हो जाया करता था उस के पलटे सब वर्णों में परस्पर "नमस्ते" क्यों चलाया ? ।

उत्तर

नमस्ते रुद्रमन्यव. नमोज्येष्ठाय च कनिष्ठायच नम: पूर्वजाय चापरजाय च नमोमध्यमाय च नमोजघन्याय च. नमस्ते प्राणक्रन्दाय ।

इत्यादि सहस्रों प्रमाण अपने से छोटे समान बड़े के लिये वैदिक पौराणिक ग्रन्थो में भी आपस में नमस्ते कहने के पाये जाते है· परन्तु जय बलदेव जी की. जयदाऊ जी की. गुरू जी की फतह राम राम पालागन. इत्यादि कल्पित वाक्यों का पता नही लगता. नमस्ते शब्द आदर सूचक है मनुष्यमात्र को परस्पर सब का यथायोग्य आदर सत्कार करना चाहिये· यह सनातन वेदोक्त प्रथा है ।

८४ प्रश्न

आर्य्य समाज के नाम से साधारण लोग क्यों घबराते हैं. और आर्य्यधर्म की उन्नति होती हुई देखने सुनने में क्यों नही आती ? ।

उत्तर

प्राय: दोषनाशक शिक्षा रोगनाशक औषधि मीठी कम होती है वेदोक्त

धर्ममार्ग चढ़ाई के समान दुर्गम और मजहब वा नवीन कल्पित मत उतार के समान सुगम हुआ करता है. जोगी भगवे वेषधारी पाषण्डी स्वार्थी सर्वत्र दृष्टि आते हैं परमहंस योगी महात्माओं के दर्शन दुर्लभ होते है । एवम् “ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः” ब्रह्मज्ञ पुरुष यथानामतथागुण ऐसे ब्राह्मण बहुत थोड़े और नाम मात्र के जाति ब्राह्मण जहा देखो तहा मिल जाया करते हैं । ऐसे अनाचारी मांसाहारी व्यभिचारी पक्षपाती धर्मघाती मिथ्यावादी शराबी कबाबी जुआरी भगड़ आदि दुर्जनों को आर्यसमाज लेता ही नही ।

८५ प्रश्न

वे ही प्राचीन पुस्तक मन्त्र तन्त्र यन्त्र है उन ही ऋषीश्वरों की सन्तान ब्राह्मण वर्ण पुरोहित है जप तप पूजा पाठ दान मान करने कराने पर कुछ फल नही मिलता ब्राह्मण लोग कलियुग का दोष बतलाते है इस विषय में तत्व बात क्या है ? ।

उत्तर

वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च ।
न विप्रभावदुष्टस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित् ॥

संसार को दिखानेमात्र से करने वाले अन्तः कपटी अनाचारी ब्राह्मणादि के वेदपाठ त्याग यज्ञ नियम जप आदि सिद्धि को नही दे सके । साम्प्रत ४ ही प्रकार के ब्राह्मण अधिकांश दृष्टि आते हैं सेवावृत्ति. भिक्षावृत्ति. वाणिज्यवृत्ति. कृषिवृत्ति. “ब्राह्मणो ब्रह्मविद्भवेत्” ऐसे वास्तविक ब्राह्मण दुर्लभ से हैं । शास्त्रोक्त षट्कर्मप्रवृत्त दुष्कर्मनिवृत्त ब्राह्मणों से किया कराया जप पाठ निष्फल नही जाता ।

८६ प्रश्न

गोहत्या महापाप विधाता ने क्या हम ही हिन्दू लोगों के लिये ठहराया यवनादि द्वीपान्तर निवासी जो नित्य गोवध करते है गोहिंसा महापाप के हेतु उन का निर्मूल क्यों नही होता ? ।

उत्तर

जब दुष्ट अपनी दुष्टता में नही चूकते तो शिष्ट अपनी शिष्टता में क्यों चूकें “ छिन्नोऽपि चन्दनतरुर्न जहाति गन्धं क्षीणोऽपि न त्यजति शीलगुणान् कुलीन. ” जैसे दुर्जन से काटा गया चन्दन का वृक्ष सुगन्ध को नही छोड़ता. तैसे ही दुर्बल

कुलीन पुरुष भी जिन का राज्याधिकार लोगों ने हरलिया हो. दया दाक्षिण्यादि अपना सनातन वेदोक्त धर्म कर्म को नहीं छोड़ते सब जीव जन्तुओं के साथ यथायोग्य वर्त्तावरूप अनुष्ठान करे जाने पर कालान्तर में पशुपतिनाथ अवश्य ही तुम्हारे कर्म का फल तुम को उन का उन्हें देवे गा ।

८७ प्रश्न

हिन्दू लोग गौ की पूजा करते उस को माता के तुल्य मानते उस का मूत्र भी पीते बैल को अपना बाबा ठहराते हैं. इस में आर्य्यसमाजियों का विश्वास कैसा है ? ।

राजपत्नी गुरोपत्नी मित्रपत्नी तथैव च ।
पत्नीमाता स्वमाता च पञ्चैता मातरः स्मृता ॥

राजा की स्त्री धर्मोपदेशक गुरु की स्त्री मित्र वा सहायक की स्त्री स्त्री की माता और अपनी माता ये समान आदरणीय है । गोजाति दुग्धादि द्वारा आबाल वृद्ध मनुष्यमात्र का पालन पोषण करती इस लिये जगन्माता कहाती है । इसी प्रकार"पा, धातु पालने. सपिता यस्तु पोषक" बैल भी हल गाड़ी गोबर चर्म द्वारा प्रजा का उपकार ही करता इसी हेतु दाना पानी घास से आदरणीय रक्षणीय कहाता है । जनक आचार्य्य गुरु राजा अन्नदाता ये ५ प्रकार के पिता नीतिशास्त्र में कहे हैं ।

८८ प्रश्न

दयानन्दी लोग श्राद्ध का निषेध ही करते हैं गंगास्नानादि तीर्थों को मानते ही नहीं देवतापूजन की निन्दा करते हैं. उन का उद्देश्य क्या है ? ।

उत्तर

दह्यमाना सुतीव्रेण नीचाः परयशोऽग्निना ।
अशक्तास्तत्पदं गन्तुं ततो निन्दां प्रकुर्वते ॥

दुर्जन लोग सज्जनों की कीर्त्तिरूप अग्नि से जल कर उन के पद को नहीं पाते इस लिये निन्दा करते हैं दयानन्दी यह शब्द अनार्य लोगों का कल्पित आर्यपुरुषों के लिये दोषारोपण है आर्यसज्जन श्रीमद्दयानन्दसरस्वती स्वामी जी को ईश्वरावतार नहीं मानते न उन के नाम की मूर्त्ति बनाय पूजते किन्तु पूर्ण

विद्वान् महर्षि वेदपारगत धर्मोपदेशक मानते हैं "अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति" इस मनुवाक्यानुसार गंगास्नानादि से देह शुद्धि भी मानते ही हैं. "विद्वांसो हि देवाः" उपस्थित विद्वान् पितरों का श्राद्ध पूजा भी करते ही है ।

८९ प्रश्न

आर्य्य शब्द कहां की बोली है थोड़े वर्षों से सुनाई पड़ता है ऐसा नगर कोई नहीं जहां आर्य्यसमाज न हो. यह मत किस ने निकाला ? ॥

उत्तर

विजानीह्यार्य्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया०

ऋग्वेद १ । ४ । १० । ३ हे परमेश्वर आर्य्यपुरुषों की सर्वथा सर्वदा रक्षा कीजिये आर्यों के विरोधी अनार्य्य दस्यु दानवों का निर्मूल हो जाय. और वाल्मीकीयरामायण में लिखा है ।

आर्य्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः ।

श्री रामचन्द्र जी आर्य्य पुरुष यथायोग्य वर्त्तावकारी सब के प्रियदर्शन थे

(महाकुलकुलीनार्य्यसभ्यसज्जनसाधवः)

यह अमरकोश द्वितीय काण्ड का वाक्य है उच्चतम कुलीन. आर्य्य सभ्य. सज्जन साधु एकार्थक है जम्बूद्वीपे आर्य्यावर्त्ते ऐसा पाठ सब द्विज सकल्प समय में परम्परा से करते आये है ।

९० प्रश्न

आर्य्य समाज और सनातन धर्मसभा के बीच धर्म विषयक मेल क्यों नहीं है ? ॥

उत्तर

ज्योतिष शास्त्रानुसार मन्वन्तर युगान्तर सवत्सर गणना करने पर सृष्टि के आदि से आज तक १९६०८५२९९५ वर्ष व्यतीत हुए. प्रति शताब्द ३ की उत्पत्ति मानी जाय तो भी ५८१७५९० पुरुष. पिता पितामह प्रपितामह वृद्धप्रपितामहादि उत्पन्न हो चुके. सब का गुण कर्म एकसा होना दुर्घट है. तन्मध्ये कोई विद्वान् मूर्ख. धनी निर्धन बली. निबल. गुणी. निर्गुण. वाचाल. मूक. उदार. कृपण. शान्त. क्रोधी. उद्योगी. आलसी. सदाचारी. अनाचारी आदि विविध स्वभाव के भये होंगे यदि सनातन धर्माभिमानी हिन्दू दुराग्रह छोड़ केवल वैदिक धर्मानुष्ठान को ही परम्पराधर्म कर्म मान लें तो शीघ्रमेव मेल हो जाय ।

९१ प्रश्न

संसार में बहुत से द्रव्य दानीय हैं तन्मध्ये कौन किस २ को दिये का कितने काल में कै गुणा फलता है किस को दिया निष्फल और अधर्म है ? ॥

उत्तर

पात्रे दानं स्वल्पमपि काले दत्तं युधिष्ठिर ।
मनसा हि विशुद्धेन प्रेत्यानन्तफलं स्मृतम् ॥

समय पर सुपात्र को श्रद्धा से अन्नादि पदार्थ दिया हुआ मरणानन्तर दाता को अनन्त फल देता है यह श्लोक महाभारत के अनुशासन पर्व अध्याय २२ का है वहीं पर प्रसगानुकूल दुष्ट धूर्त विषयी छली द्वेषी स्वार्थी आदि दुराचारी दुर्जनों को द्रव्य देना मानो ब्राह्मण के वेषधारी बधिक चण्डाल को गोदान देना महापाप है और मनुजी कहते है कि " पाषण्डिनोविकर्मस्थान् " वेद विरुद्धाचारी पाषण्डियों का तो वाणीमात्र से भी कभी आदर नहीं करना चाहिये ॥

९२ प्रश्न

कहने, कर दिखाने में बड़ा अन्तर है आपने भिक्षुक से लेकर चक्रवर्ती राजा और कुवेर सदृश धनिक होने के शास्त्रीय प्रमाण सहित उपाय बनाये हैं आप ही एक माण्डलिक राजा तथा हृष्ट पुष्टाङ्ग क्यों न हो गये. गोवधादि दुष्कर्म क्यों नहीं बन्ध कर दिखाये ? ।

उत्तर

प्रात: काल का किया पाठ भजन दिन भर के लिये दुराचार से बचाता. सायकाल का किया सन्ध्या वन्दन रात्रि में व्यभिचारचोरी आदि दुष्कर्म से रोकता है । बाल्यावस्था का विद्याभ्यास वृद्धावस्था पर्यन्त सुखदायक होता इस जन्म के किये कोई २ धर्म्म कर्म्म परजन्म के लिये शेष रहने पर सद्गति दीर्घायु सुख भोग के कारण होते हैं जीव नित्य देह अनित्य है ऐसा निश्चय ज्ञान से भी कर्त्तव्य कार्य में तत्पर हूं ।

९३ प्रश्न

परमेश्वर को दयालु माना जाय तो न्यायकारी नहीं. और न्यायकारी मानने पर दयालु नहीं ठहरता. दोनों गुण से पूर्ण होने के प्रमाण दीजिये ? ।

उत्तर

यदि कल्पारम्भ में ही अपनी करुणा से प्रजा के हितार्थ वेद विद्या द्वारा धर्माधर्म का बोध न करावे तो कोई भी धर्म अर्थ काम मोक्ष का अधिकारी न हो और न जीवहिंसा निन्दा आदि पाप कर्म्म से बच सके और मनुष्य मात्र अपने किये शुभाशुभ कर्मफल आप ही नहीं पासक्ता वह दयामय जगत्पिता बुराई का फल ताड़न शिक्षा वा आगे को निरोध निमित्त और भलाई का फल उत्साह उत्पन्न कराने के लिये दिया करता है, न्याय नीति दया उपकार एकार्थक हैं जो परमेश्वर के स्वाभाविक गुण कर्म कहाते हैं गुण गुणी का नित्य मेल बना रहता है जैसा अग्नि का तेज स्वरूप दाह गुण ये अग्नि से पृथक् नहीं हैं ।

९४ प्रश्न

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवतीत्यादि ।

हे अर्जुन ! जब २ लोगो के धर्म से ग्लानि अधर्माचरण फैल जाता है तब २ साधुओं की रक्षा, पापियो का विनाश निमित्त देहधारण करता हूं साम्प्रत गौ ब्राह्मणों की दुर्दशा देख गोपाल जी को सन्तोष न भया होगा, अथवा भगवद्गीता निरी झूठी है ? ।

उत्तर

भगवद्गीता में नीति वैराग्य तथा मतमतान्तरीय कई प्रकार के वाक्य पाये जाते हैं इसीलिये अल्पज्ञ लोग गीता को अनेकार्थवती बतलाते हैं. पर हां दुर्गापाठ नामिका निर्मूल कल्पित कहानी से कई गुणी भली है । यदि विनाशाय च दुष्कृतामित्यादि वाक्य श्रीकृष्ण जी के होवें तो श्री स्वामीदयानन्दसरस्वती रूप से ही उक्तराजर्षि का गो ब्राह्मणादि जगद्रक्षार्थ जन्म लेना वा आना अनुमान हो सक्ता है ।

९५ प्रश्न

कोई कैसा ही कार्य्य क्यों न हो एक जन तो उस की प्रशंसा करता है. दूसरा उसी में दोषारोपण करता है अब किस २ के मन की सी की जाय ? ।

उत्तर

एकोऽपिवेदविद्धर्म्मं यं व्यवस्येद्द्विजोत्तमः ।

स विज्ञेयः परो धर्मोनाज्ञानामुदितोऽयुतैः ॥

धृ=धारणे. धारण ग्रहण वरण सम्पादन के योग्य जो कर्म सो ही धर्म कहाता है सो सृष्टि भर के मनुष्यमात्र का एक ही है. यद्यपि रूप भेद के समान मनुष्यों की बुद्धि में भी भेद पाया जाता है तथापि मनु जो कहते हैं कि एक भी वेदपारगत आप्त पुरुष जो व्यवस्था मर्यादा बतावे सो ही धर्म है उसी के मत कीसी करनी चाहिये. परन्तु १०००० दशसहस्र अज्ञानी अभिमानी दुराचारी अनर्थकारी मांसाहारी व्यभिचारी स्वार्थी हठी आदि दुर्जनों की सम्मति धर्म नहीं है ॥

१६ प्रश्न

जिस की अवस्था विद्या पढ़ने की न रही हो. दिन भर परिश्रम किये बिना निर्वाह न हो सक्ता हो उस के लिये भी कोई युक्ति सिद्धि समृद्धि भुक्ति मुक्ति प्राप्त होने की सुगम विधि किसी शास्त्र में लिखी हो तो कृपा पूर्वक बताइये?

उत्तर

ओ३म् परमात्मने नमः ओ३म् नमोब्रह्मणे ओ३म् नमः सिद्धम्. ओ३म् जातवेदसे नमः ओम् खम्ब्रह्म इन में से जिस नाम पर जिस की श्रद्धा हो ग्रहण करके मन ही मन प्रतिक्षण विशेष कर १ । १ मुहूर्त प्रातः सायंकाल स्मरण भजन किया करै। "जप्येनैव तु संसिद्ध्येत्" सर्वदा अपने बाहर भीतर परमेश्वर को जानता मानने वाला ब्रह्मज्ञानी निरभिमानी शुद्धाचारी सत्यवादी मनुष्य केवल जपमात्र से ही सम्यक् सिद्धि को पा सक्ता वा पूर्ण हो सक्ता है. शेष व्यावहारिक दान धर्मादि करै चाहै न करै ।

१७ प्रश्न

दूध की उत्पत्ति मांस से देखी जाती है जिस ने गौ बकरी आदि जिस पशु का दूध पिया मानो उस का मांस भी खा लिया. तब मांस का निषेध क्या?

उत्तर

यदि दूध की उत्पत्ति मांस से होती तो वन्ध्या स्त्री वन्ध्या गौ बैल भैंसा हाथी और मोटे ताजे मनुष्य भी दूध दे सक्ते ऐसा देखने सुनने में भी नहीं आया दूध दैवी प्रसाद फलरूप समय पाकर प्रसूतिका स्त्री गौ आदि से ही उत्पन्न होता है. जब आहार और प्रसूत काल के प्रभाव से दूध स्तनों में भर जाता है तो गौ आदि स्वयं चाहते हैं कि निकल जाय और दुहने में उन को कष्ट भी नहीं होता ऐसा निश्चय जान माता के दूध को सब पीते हैं मांस कोई नहीं खाता

मास और दूध को समान ही समझने वाले व्याघ्रवत् दुर्जन माता के मास खाने से नही बच सके ।

९८ प्रश्न

प्रजानाथ परमेश्वर ने पाप क्यों बनाया ? ।

उत्तर

" परद्रव्येष्वभिध्यानमित्यादि " पर द्रव्य हरण की इच्छा करना. मन से किसी का बुरा चाहना. असम्भव बात में विश्वास लाना. कठोर वाणी बोलना. झूठ बोलना. चुगली खाना. पहिले के विरुद्ध पीछे कहना. बिना दिये परद्रव्य हरलेना. बिना अपराध स्वार्थसाधन निमित्त गौ बैल आदि उपकारी पशुओं को मारना. परस्त्रीगमन वा वेश्यागमन करना ये ही १० प्रकार के पापकर्म कहाते है । जब धर्मशास्त्र में इन बुरे कामो के करने की आज्ञा नही पायी जाती वरन सर्वथा निषेध ही पाया जाता है तब पाप परमेश्वर का बनाया कैसे पाया गया ? क्या पाप ईसाई मुसलमानों का सामान्य कोई शैतान है जिसने खुदा की बरकत में भी हरकत कर दिखाई ।

९९ प्रश्न

मुक्तिदशा में जीव कहां रहता. किसविधि से निर्वाह करता है. कोई आचार्य्य मोक्षकाल की भी अवधि पूर्ण होने पर पुनरागमन मानते और कोई नहीं मानते इस का भी सप्रमाण निर्णय निश्चय करा दीजिये गा ? ।

उत्तर

जैसा कोई पूर्ण विद्वान् विद्यारूपी गुप्त धन के प्रभाव से सर्वत्र आदर पाता है तैसा ही कई जन्म से धर्म समूह सञ्चित जिस पुरुष के पास है वह त्वचा लोहू मास नाड़ी हड्डी मज्जा वीर्य्य इन ७ धातुओं का परमाणुरूप सार लेकर लोकलोकान्तर में स्वतन्त्र विहार करता. शुभकर्मों के वा तप के फलरूप आनन्द की अवधि पूर्ण होने पर फिर कुलीन ब्राह्मण महात्मा पुरुषो के घर जन्मपाता है परन्तु शुभाशुभ कर्म सम्पादन और उस का फल सुख दुःख की अवधि को न मानने वाले अनार्य्य अविवेकी कहाते है ।

१०० प्रश्न

आप की वार्त्ता सुन कर हम द्विविधा में फंस गये जो आप की वार्त्ता

मानें तो जाति बिरादरी के लोगो का वैरी हो जाने की शंका है और न माने तो नरक की यातना भोगने की सम्भावना है अब क्या किया जाय ? ।

उत्तर

एकाकी चिन्तयेन्नित्यंविविक्ते हितमात्मनः ।
एकाकी चिन्तयानो हि परं श्रेयोऽधिगच्छति ॥

एकान्त स्थान में एकाग्र चित्त से निष्पक्ष हो कर कार्य्य सम्पादन विषय में नित्य अपने हित की चिन्ता करता हुआ मनुष्य परम कल्याण को प्राप्त होता है. ऐसा मनु भगवान् ने कहा है । प्राणप्रतिष्ठा करने पर जड़ मूर्त्ति चेतन नहीं हो जाती और आवाहन करने पर सूर्य्यादि ग्रह मृतक पितर नहीं आसकते. इत्यादि सत्यासत्य धर्म्माधर्म विषयक वाक्यों का निर्णय तुम ही करलो ।

प्रार्थना

ओ३म् सुमित्रिया न आपओषधयः सन्तु ॥
दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ।
यजुर्वेद के ३६ अध्याय का २३ मन्त्र ।

हे प्रजापते ! सर्वाधिस्वामिन् ! आप की कृपा से प्राण और जलादि पदार्थ तथा सोमलता आदि ओषधियां अन्नादि हमारे लिये सुखकारक होवें तथा वेही उक्त द्रव्य हमारे विरोधी जो नास्तिक हिंसक निन्दक वंचक लम्पट छली द्वेषी दस्यु दैत्य राक्षस असुर हम से द्वेष करते हैं उन दुष्ट जन्तुओं के लिये दुःखदा-यक विषरूप होवें जिस से हम लोग परस्पर आप की सनातनी वैदिकी आ-ज्ञानुकूल निर्विघ्न निष्कण्टक बर्त्ताव करसकें हे परमात्मन् ! अपनी करुणा से ही हम सब लोगो को सुमति सद्गति सद्बुद्धि दीजिये । ओ३म् शान्तिः ३ ॥

इति